बारहवां अंक–2024

आकाशवाणी समाचार भारती

BHARAT
BRAZIL

G20
भारत 2023 INDIA

G20 | P20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
PARLIAMENTS FOR
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

भारत 2023 INDIA

संजय जाजू, भा.प्र.से.
सचिव
SANJAY JAJU, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
SHASTRI BHAWAN, NEW DELHI - 110001

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी, नई दिल्ली अपनी गृह पत्रिका **'आकाशवाणी समाचार भारती'** के 12वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि गृह पत्रिका किसी भी संगठन का दर्पण होती है और उसमें प्रकाशित रचनाएं हमें उस विभाग विशेष के कामकाज की झलक दिखलाती है। हिंदी पत्रिका के सतत प्रकाशन से न केवल अधिकारियों/कर्मचारियों को भावाभिव्यक्ति का अच्छा अवसर मिलता है बल्कि इससे राजभाषा का प्रचार-प्रसार भी होता है। हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्र की वाणी है। हिंदी की सच्ची सेवा उसे जीवन के हर क्षेत्र में सहज रूप से अभिव्यक्ति का साधन बनाना है।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ी समस्त टीम को उनके सराहनीय कार्य हेतु बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन करने में योगदान दिया है।

शुभकामनाओं सहित,

(संजय जाजू)

Room No. 654, 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Tel. : 011-23382639, Fax : 011-23383513, E-mail : secy.inb@nic.in

गौरव द्विवेदी, आई.ए.एस.
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती | PRASAR BHARATI

Gaurav Dwivedi, IAS
Chief Executive Officer

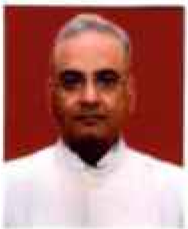

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग राजभाषा पत्रिका **'आकाशवाणी समाचार भारती'** के 12वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

कार्यालय स्तर पर प्रकाशित की जाने वाली हिंदी पत्रिका की विशिष्ट भूमिका होती है। इसके माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध होता है, जिससे उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का विकास होता है। लेखकों की रचनात्मक कृतियां पाठकों में हिंदी के प्रति रुझान बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है, जिससे राजभाषा का प्रचार सहज रूप में हो जाता है। आशा है कि **'आकाशवाणी समाचार भारती'** भी इन बहुआयामी उद्देश्ययों को पूरा करेगी।

'आकाशवाणी समाचार भारती' के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं और कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई।

(गौरव द्विवेदी)

मौसुमी चक्रवर्ती
महानिदेशक (समाचार)

MAUSHUMI CHAKRAVARTY
Director General (News)

सत्यमेव जयते

समाचार सेवा प्रभाग : आकाशवाणी
News Services Division : Akashvani

संदेश

आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका 'आकाशवणी समाचार भारती' का प्रकाशन उस विभाग की हिंदी के प्रति निष्ठा का द्योतक है, जहां अनेक भाषाओं में कामकाज होता है। राजभाषा के प्रति यह निष्ठा हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है।

हिंदी ने जहां अपनी आवश्यकता अनुसार अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित किया, वहीं अन्य भाषाओं को अपने शब्द प्रदान कर उनकी अभिव्यक्ति को सुंदर व स्पष्ट बनाने में भी सहयोग दिया है। आज हिंदी ने अनेक भाषाओं के शब्दों को ज्यों का त्यों अपने में मिला लिया है, जिससे वास्तव में यह हिन्दुस्तानी भाषा का रूप ले चुकी है। हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं बल्कि संपर्क भाषा का भी महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी समाचारों, रेडियो और दूरदर्शन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'आकाशवाणी समाचार भारती' के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी में काम करने और कार्यक्रमों को हिंदी में निर्मित और प्रसारित करने के लिए समुचित माहौल बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मुझे आशा है कि समाचार सेवा प्रभाग के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण राजभाषा हिंदी के सरल एवं सहज रूप को और अधिक प्रचलित कर इसे आम आदमी की भाषा बनाने में अपना पूर्ण योगदान देते रहेंगे।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मौसुमी

(मौसुमी चक्रवर्ती)

भारत का लोक सेवा प्रसारक / India's Public Service Broadcaster
कमरा नं० 206, नव प्रसारण भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली / New Broadcasting House, Sansand Marg, New Delhi-110001.
Ph:- +91-11-23421218(0),+91-11-23421219(Fax)
Email: maushumi@gmail.com/airnsd.rep@gmail.com

इस अंक में

क्रस	रचना	लेखक	पृष्ठसंख्या
1.	रेगिस्तानी तरंगों पर हिंदी	उमेश चतुर्वेदी	8
2.	ए काश कि मेरी राहों में वह गुज़रे ज़माने आ जाएं	फरहत नाज़	10
3.	विदेश मंत्री के साथ विशेष साक्षात्कार	शुभश्री महापात्रा	11
4.	तेजाब	रविन्दर सिंह	16
5.	भारतः जी–20–वसुधैव कुटुम्बकम	रविन्द्र कौल 'रवि'	17
6.	दोस्तों के नाम एक सलाम	राजश्री	25
7.	जी–20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत भाषण की मुख्य बातें	साभार गूगल	26
8.	ये रंग बदलता ज़माना आया है	पूनम	27
9.	जी–20 प्रतिनिधियों को खूब रास आया 'देश का दिल'	संजीव शर्मा	28
10.	G–20 के जरिए सुनहरे भविष्य का संधान	डॉ. कुमार कौस्तुभ	33
11.	भारत का जी–20 मोमेंट : वैश्विक मंच पर दिखाया अपना उभार!	साभार गूगल	36
12.	गोमती–डंबूर–छबिमुरा : त्रिपुरा की मनोरम प्राकृतिक सुंदरता का विलोभनीय संगम	शुभाशीष कुमार चंदा	38
13.	स्त्री जिजिविषा/हिंदी	दीपा यादव	40
14.	G-20 समिट में भारत का क्या रोल है और इससे देश को क्या फायदा होगा?	साभार गूगल	41

क्रस	रचना	लेखक	पृष्ठसंख्या
15.	'रेडियो अक्ष': दृष्टि विकलांग व्यक्तियों के लिए एक विशेष वरदान	सुनील डबीर	44
16.	एक छोटी सी रचना सभी बहनों को समर्पित	सौरभ कुमार	46
17.	जी–20 शिखर सम्मेलन 2023: जी 20 घोषणा पत्र भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका का द्योतक	साभार गूगल	47
18.	सुशासन : एक दृष्टि	अजीज अहमद	49
19.	अब गोविंन्द न आएंगे	रविन्दर सिंह	51
20.	कोलाज रिश्तों का	विनीता ठाकुर	52
21.	नई रोशनी	अशोक अगरोही	54
22.	चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का योगदान	रविकांत	56
23.	मोक्षदायिनी चाटुकारिता	अशोक अगरोही	57
24.	अजीब दास्तां है ये/एक स्त्री के कुछ प्रश्न	आकर्षिता सिंह	59
25.	मां को दिलासा	अनिल	60
26.	मेरी सहचरी तनहाइ/दीवारें मन की	सत पाल	61
27.	मेरी मुक्तेश्वर यात्रा	गीतांजलि कपूर	62

आकाशवाणी समाचार भारती

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी की वार्षिक गृह पत्रिका
12वां अंक–2024

संपादकीय विवरण

संरक्षक
श्रीमती मौसुमी चक्रवर्ती

मार्गदर्शन
श्री विवेक गौड़

संपादक
श्रीमती गीतांजलि कपूर

सहयोग
श्रीमती नरेश कुमारी

मुद्रक एवं सज्जा
आई प्रिंट, प्रिंटिंग प्रेस,
आर जेड एफ -396,
पालम, नई दिल्ली- 110077

निःशुल्क
आंतरिक वितरण हेतु

संपादकीय

आकाशवाणी समाचार भारती का 12वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रत्येक व्यक्ति में अभिव्यक्ति के गुण जन्मजात होते हैं। विचारों की अभिव्यक्ति का ढंग अलग–अलग हो सकता है। हर कोई चाहता है कि उसकी बात दूसरों तक पहुंचे और वे लोग उसके विचारों को जानें, समझें और सराहें। महात्मा गांधी ने भी इस बात पर जोर दिया था कि सभी भाषाओं के शब्दों को मिलाकर जो भाषा बनेगी वह सभी के लिए सहज होगी और सब उसे आसानी से समझ और लिख पाएंगे। राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए किए जा रहे प्रयासों की एक कड़ी में 'आकाशवाणी समाचार भारती' का प्रकाशन किया जाता रहा है। 'आकाशवाणी समाचार भारती' का प्रकाशन भी सरल व सहज हिंदी को बढ़ावा देने एवं समाचार सेवा प्रभाग के कर्मियों की रचनात्मक प्रतिभा का परिचय कराने का एक माध्यम है। इसमें सभी लेखकों ने अपने–अपने विचारों को कहानी, कविता अथवा लेखों के माध्यम से व्यक्त किया है।

रचनाओं की सहजता आपको आनंद प्रदान करेगी यह आशा है।

प्रकाशित रचनाओं में विचारों/तथ्यों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

समाचार सेवा प्रभाग : एक नज़र में

1. राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व एफएम बुलेटिनों की संख्या	–	522
ल अवधि	–	48 घंटे 35 मिनट
भारतीय भाषाएं/बोलिया	–	82
2. दिल्ली से प्रसारित हिंदी समाचार बुलेटिन	–	22
अवधि	–	2 घंटे 30 मिनट
अंग्रेज़ी समाचार बुलेटिन	–	23 बुलेटिन
अवधि	–	3 घंटे 25 मिनट
विदेशी समाचार बुलेटिन	–	54
अवधि	–	7 घंटे 46 मिनट
भाषाओं की संख्या (भारतीय और विदेशी)	–	15
क्षेत्रीय समाचार इकाइयों की संख्या (दिल्ली इकाई सहित)	–	46
3.क्षेत्रीय समाचार बुलेटिनों की संख्या	–	231
अवधि	–	31 घंटे 40 मिनट
भाषाएं/बोलियां	–	82
क्षेत्रीय समाचार इकाई एफएम मुख्य समाचार	–	228
अवधि	–	8 घंटे लगभग
4. क्षेत्रीय समाचार इकाइयों से विदेश सेवा के समाचार बुलेटिनों की संख्या	–	33
अवधि	–	278 मिनट
भाषाओं की कुल संख्या	–	11 विदेशी
(भारतीय/विदेशी)	–	+2 देशी

रेगिस्तानी तरंगों पर हिंदी

उमेश चतुर्वेदी

इसे संयोग कहें या फिर कुछ और, जिस समय तमिलनाडु और केरल के चुनावी माहौल में हिंदी पर सवाल उठाने की सियासी कोशिश हो रही थी, ठीक उसी वक्त सहारा रेगिस्तान के आसमान में हिंदी की तरंगे छाने की तैयारी में थी। पेट्रो डॉलर के लिए मशहूर कुवैत के रेगिस्तानी वायुमंडल में हिंदी गूंजने लगी है। इसकी शुरूआत बीते 21 अप्रैल को शुरू हुई। कुवैत रेडियो ने रोजाना रात साढ़े आठ से नौ बजे के बीच एफएम रेडियो पर हिंदी में प्रसारण शुरू किया है। इस प्रसारण की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसके लिए कुवैत स्थित भारतीय दूतावास ने इस प्रसारण का स्वागत किया है।

अपनी जुबान की कीमत तब समझ आती है, जब हम अपनी माटी से दूर होते हैं। जहां की फिजां में भाषा और बोलियां होती तो हैं, लेकिन अपनी बोली–बानी नहीं होती। ऐसे मौके पर अगर अपनी माटी का कोई मिल जाता है तो जैसे जुबान रस से भर उठती है। भाषा के स्तर पर जब चौतरफा अपरिचित सा माहौल हो, वहां अगर रेडियो पर अपनी जुबान सुनाई दे जाए तो उस वक्त कानों के जरिए मन–मस्तिष्क तक पहुंची तरंगों का आनंद वही समझ सकता है, जिसे अपनी जुबानी मिठास का अनुभव होता है। कुवैत ही नहीं, अरब देशों में समूचे भारत के लोग नौकरियां कर रहे हैं। जिनमें हिंदी भाषियों की संख्या भी खूब है। लेकिन उनकी अपनी बोली–बानी में रेडियो या टीवी का प्रसारण नहीं रहा है। कुवैत की सरकार ने अपने हिंदी भाषी कर्मचारियों के सांस्कृतिक दर्द को समझा है और हिंदी में रेडियो प्रसारण के जरिए उस दर्द पर राहत का फाहा लगाने की कोशिश की है।

साल 2022 में सूचना के अधिकार के तहत विदेश मंत्रालय ने बताया था कि विदेशों में करीब एक करोड़ 34 लाख भारतीय हैं। जिनमें से करीब 66 फीसद लोग अरब देशों में हैं। इनमें सबसे ज्यादा संख्या संयुक्त अरब अमीरात में हैं। फिर बहरीन, कुवैत या सऊदी अरब में रहते हैं। इन भारतीयों में हिंदी भाषियों की संख्या ठीक–ठीक तो पता नहीं। लेकिन यह भी सच है कि देश की सरहदों के बाहर ज्यादातर भारतीयों की पहचान हिंदी जुबान ही है। खाड़ी देशों में पाकिस्तान और बांग्लादेश के भी लोगों की अच्छी–खासी तादाद है। उनके बीच आपसी संवाद की भाषा हिंदी ही है। सरहदों के बाहर सबकी पहचान पुराना उपमहाद्वीपीय भारत ही है। लिहाजा उनकी साझे की भाषा हिंदी ही है।

वैसे दुबई में पहले से ही हिंदी में प्रसारण जारी है। वहां कड़क, रेडियो 4, सिटी रेडियो, टाक, सुनो एफएम और बिग एफएम का अपना प्रसारण पहले से ही जारी है। ज्यादातर रेडियो चैनल हिंदी के साथ मलयालम, तमिल, बांग्ला आदि में प्रसारण करते हैं। लेकिन दुबई के अलावा दूसरे अरब देशों में हिंदी में प्रसारण नहीं है। कुवैत दूसरा देश है, जिसने हिंदी प्रसारण की शुरूआत की है।

अरब देशों की ख्याति अपने कठोर कानूनों और कड़क सांस्कृतिक पहचान के लिए रही है। इन देशों में विदेशी संस्कृतियों के लिए गुंजाइश कम रही है। दुबई इसका अपवाद रहा है। दुबई की स्थिति ऐसी है कि उसे अब मुंबई का विस्तार माना जाता है। लेकिन अरब के दूसरे देशों में दूसरी संस्कृतियों के प्रति उदारवादी भाव कम रहा है। लेकिन अब वहां

भी हालात बदलने लगे हैं। अब अरब देश भी मानने लगे हैं कि उनके यहां जो प्रवासी कामगार हैं, वे उनकी अर्थव्यवस्था के अनमोल हिस्से हैं। इसलिए उनकी सहूलियतों और संस्कृतियों का ध्यान रखा जा रहा है। अरब देशों में बदलती सांस्कृतिक बयार का ही प्रतीक है कि अब वहां मंदिर भी बनने लगे हैं और उनकी भव्य प्राण प्रतिष्ठा भी होने लगी है। भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी प्रसारण के लिए अपने वायु तरंगों को मुहैया कराने को इसी बदलाव का विस्तार समझा जा सकता है। यह बदलाव की बयार का ही असर है कि सऊदी अरब में भी जुलाई से हिंदी में प्रसारण की तैयारी है। अरब देशों से सटे ईरान का तेहरान रेडियो हिंदी और उर्दू में अरसा पहले से प्रसारण करता रहा है। लेकिन उसके प्रसारणों की पहुंच अरब देशों में कम रही है। दुबई के बाद कुवैत की वायु तरंगों में हिंदी का तरंगित होना नए युग की शुरूआत है। अपनी हिंदी वैश्विक स्तर पर स्वीकृत हो रही है। कुवैत में हिंदी प्रसारण उसी का विस्तार है। हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता देश की सरहदों के भीतर वर्चस्ववाद के नाम पर उठने वाली सियासी आवाजों को जवाब है।

वैश्विक उपनिवेशवाद और अर्थव्यवस्था में दबदबे के चलते डॉलर के साथ अंग्रेजी का वर्चस्व अरब देशों में भी रहा है। उसके बीच हिंदी का धीरे–धीरे स्नेहिल जगह बनाना भारतीयता का भी विस्तार है। सहारा के रेगिस्तान में जार्डन और तुर्की ऐसे देश हैं, जहां यूरोप का ज्यादा असर है। इन देशों में भी भारतीय लोग काफी संख्या में हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में वहां की तरंगों पर भी हिंदी अपनी जगह बनाने में कामयाब होगी।

रेगिस्तानी इलाके में ठंडी हवा का झोंका जिस तरह जिंदगी का प्रतीक होता है, चौतरफा विदेशी जुबान के बीच हिंदी की ध्वनियों का गूंजना भी कुछ वैसा ही है। दुबई और कुवैत में आधिकारिक रूप से गूंज रही हिंदी पराया माहौल में अपनापन की नई इबारत लिखेगी। सरहदों के पार हिंदी कुछ राज्यों की भाषा की ही नहीं, भारतीयता की प्रतीक है। इसलिए रेगिस्तान की सूखी रेत पर हिंदी की प्राण बूंदों का स्वागत भारतीय समाज द्वारा किया जाना स्वाभाविक ही है।

इससे पहले संयुक्त अरब अमीरात में न्याय की भाषा में हिंदी को भी शामिल किया जा चुका है। साल 2019 में अमीरात की सरकार ने यह फैसला लिया। वैसे यह बिडंबना ही है कि अपने ही देश में हिंदी और भारतीय भाषाएं अपने संवैधानिक अधिकारों के लिए जूझ रही हैं। ऐसे , तब दूर–देश से हिंदी के समर्थन में खबर आई, तो हिंदी प्रेमियों में उत्साह की लहर दौड़ गई.. अरब देश संयुक्त अरब अमीरात यानी यूएई के अबू धाबी के न्यायिक विभाग ने अपने यहां न्यायिक सुनवाई की भाषा के तौर पर हिंदी को भी मंजूरी दे दी है। इसके पहले वहां अरबी और अंग्रेजी में ही न्यायिक और प्रशासनिक कामकाज होता था। लेकिन भारतीयों की इस देश में बढ़ती संख्या के मद्देनजर वहां की सरकार ने हिंदी में भी न्यायिक सुनवाई और फैसला सुनाने की व्यवस्था को मंजूरी दे दी है।

अब जरा यहां देखिए। यहां भारतीय भाषा अभियान को इसके लिए लगातार संघर्ष करना पड़ रहा है। भारत के समाजवादियों और राष्ट्रवादियों में भले ही तमाम मुद्दों पर विरोध हो, लेकिन कुछ मुद्दों के साथ भाषा भी ऐसा मुद्दा है, जिस पर दोनों समान सोच रखते हैं। दोनों की ही मांग रही है कि भारतीय भाषाओं को प्रशासनिक और न्यायिक तंत्र में तरजीह दी जाए। लेकिन इस विचार के दुश्मन अंग्रेजी माध्यमों से पढ़े–लिखे वे लोग ही रहे हैं, जो प्रशासनिक और न्यायिक तंत्र के उच्च और प्रभावी पदों पर विराजमान हैं।

यह विरोधाभास नहीं तो और क्या है कि एबीसीडी भी न जानने वाले शख्स को यह पता नहीं होता कि उसने अपने अधिकार और इंसाफ के लिए हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट में जो अपील दायर की है, उसमें उसकी बात रखी भी गई है या नहीं। ऐसे में जो न्याय हो रहा है, वह

सचमुच में हो भी रहा है या नहीं, यह न तो वादी को सही तरीके से पता होता और न ही प्रतिवादी को। न्याय की भाषा में कहा जाता है कि न्याय को होता हुआ दिखना भी चाहिए।

भारत की सीमाओं से बाहर हिंदी का बढ़ता सम्मान भारतीय भाषा प्रेमियों के लिए उत्साह का विषय है। उम्मीद की जानी चाहिए कि भारतीय भाषा प्रेमी हिंदी की इस विश्व विजयी यात्रा से प्रेरणा ग्रहण करेंगे और भारतीय भाषाओं को भारतीय मानस का अक्स बनाने की अपनी कोशिशों पर कभी विराम नहीं लगाएंगे—

****

फरहत नाज़
हिंदी समाचार कक्ष

ए काश कि मेरी राहों में वह गुज़रे ज़माने आ जाएं

ए काश कि मेरी राहों में वह गुज़रे ज़माने आ जाएं
जो साथ में खेला करते थे वह दोस्त पुराने आ जाएं
जो छोड़ गए तन्हा मुझको मैं याद उन्हीं को करती हूं
जो हम सब मिलकर गाते थे वह गीत अब अकेला गाती हूं
फुर्सत के जमाने में जब भी मैं गांव आया करती हूं
तफरीह के गर्ज़ से जब भी मैं सैर को जाया करती हूं
माज़ी के दामन चाक किए कुछ याद पुराने आने लगे
जो बचपन में रविवार के दिन हम सब ने मिलकर मौज किए
वह मुझसे मिलने आते थे मैं उनके घर जाया करता थी
जो वक्त गुज़ारे साथ में हम वह शाम सुहाने आ जाएं
काश मेरे बचपन के वो दोस्त सारे मिल जाएं
ए काश कि मेरी राहों में वह गुज़रे ज़माने आ जाएं

****

स्पॉट लाइट कार्यक्रम में दिनांक 12.08.2023 को प्रसारित साक्षात्कार

विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर का विशेष साक्षात्कार।

साक्षात्कारकर्त्ता : शुभश्री महापात्रा
निदेशक (समाचार)

स्वतंत्रता के बाद कई वर्षों तक भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता से परिभाषित रही। शीत युद्ध के बाद के दौर में आर्थिक उदारीकरण ने विदेश नीति की प्राथमिकताओं में काफी हद तक सुधार किया। अगला बदलाव अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हो रहा है। मौजूदा सरकार के पिछले नौ वर्षों में कई उपलब्धियां हासिल हुई हैं। आज हमारे साथ हमारे स्टूडियो में विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर हैं। सर, आकाशवाणी में आपका स्वागत है।

महोदय, सबसे पहले मैं आपसे अनुरोध करना चाहूंगी कि आप हमें पिछले दशक में भारतीय विदेश नीति में किए गए प्रमुख परिवर्तनों के बारे में बताएं।

ठीक है, मुझे लगता है कि यह शुरुआत करने के लिए एक अच्छी जगह है और आपने इस तथ्य का उल्लेख किया कि हम शुरुआत में विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता से जोड़ते हैं तो, गुटनिरपेक्षता क्या थी? गुटनिरपेक्षता एक देश द्वारा एक विशेष युग में अपनी स्वतंत्रता व्यक्त करना था। तो, हम 1940, 50, 60, शायद थोड़ा और, शायद 70 के दशक की बात कर रहे हैं, लेकिन यह एक ऐसा युग था जब हमारी अपनी क्षमताएँ सीमित थीं और साथ ही जहाँ हमने अपने राष्ट्रीय हित को पहले नहीं रखा। इसलिए, कभी–कभी शायद हमें वह लाभ और फायदा नहीं मिला जो हमें मिल सकता था, लेकिन वह अतीत की बात है। अब, उसके बाद जो हुआ वह यह था कि हमने 1990 के दशक में एक बड़ी चुनौती का सामना किया, जैसा कि आपने खुद कहा, यह युग सुधार का समय था। यह सुधार का समय था क्योंकि 1940 से 1990 तक की आर्थिक नीतियाँ सफल नहीं हुईं। हमारे सामने एक संकट था। इसलिए, अब हमें न केवल अपनी आर्थिक नीति बदलनी थी, बल्कि हमें अपनी विदेश नीति भी बदलनी थी क्योंकि आर्थिक विदेश नीति, आर्थिक नीति और विदेश नीति एक साथ चलती हैं। अब, आज, जो हुआ है, वह यह है कि हम एक अलग युग में हैं। यह एक ऐसा युग है, जहाँ हम अधिक सक्षम हैं, हम अधिक आश्वस्त हैं, हम अधिक महत्वाकांक्षी हैं, हमें लगता है कि हम एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। हम आज दुनिया में आर्थिक रूप से पांचवें नंबर पर हैं और यह एक ऐसा समय भी है जो अधिक वैश्वीकृत है, जो अधिक प्रौद्योगिकी संचालित है। इसलिए, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चुनौतियाँ अलग हैं, क्षमताएँ अलग हैं, लक्ष्य अलग हैं क्योंकि उन्हें स्वयं, आज, दुनिया की अच्छी समझ है। उन्हें भारत के लोगों, विशेष रूप से भारत के युवाओं पर बहुत भरोसा है। उन्हें प्रौद्योगिकी की गहरी समझ है और उनका मानना है कि हम वैश्विक अवसरों का पूरा लाभ उठा सकते हैं। इसलिए, हम आज बहुत अधिक सक्रिय हैं, बहुत अधिक दृश्यमान हैं, हम अपने समय के बड़े मुद्दों और विचारों को आकार दे रहे हैं और हम एक ही समय में राष्ट्रवादी और अंतर्राष्ट्रीय हैं और हम दुनिया के साथ अधिक काम कर रहे हैं लेकिन हम हमेशा भारत के हित को केंद्र में रखते हैं। अतीत की तरह नहीं जहाँ हमने अक्सर भारत के हितों का त्याग किया या हमने किसी वैचारिक कारण से भारत के हितों को किसी

अन्य देश के हितों के पीछे रखा।

महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि भारत 9 और 10 सितंबर 2023 को पहली बार जी–20 नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। पिछले जी–20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत की प्राथमिकताओं के रूप में हरित विकास, जलवायु वित्त, पर्यावरण के लिए जीवनशैली पर जोर दे रहे थे। नई दिल्ली जी–20 नेताओं का शिखर सम्मेलन भी ऐसे समय में हो रहा है जब यूक्रेन में युद्ध को लेकर बड़ी शक्तियां विभाजित हैं। शिखर सम्मेलन के अंतिम परिणाम पर इसका कितना प्रभाव पड़ेगा और शिखर सम्मेलन में भारत की प्रमुख उपलब्धियां क्या होंगी?

देखिए, दो बड़े विभाजन हैं जिन्हें जी–20 को संबोधित करना है। एक, आपने उल्लेख किया, जिसे आप यूक्रेन संघर्ष के कारण पूर्व–पश्चिम विभाजन कह सकते हैं, लेकिन एक बड़ा विभाजन है, उत्तर–दक्षिण विभाजन, विकास का विभाजन, स्वास्थ्य का विभाजन, शिक्षा का विभाजन, यहाँ तक कि जलवायु कार्रवाई का भी विभाजन। इसलिए मैं कहूँगा, आज भारत, कहीं बीच में है। हमें उत्तर–दक्षिण के लिए समाधान खोजना है, हमें पूर्व–पश्चिम के लिए समाधान खोजना है, यह एक बड़ी जिम्मेदारी है और जी–20 का अध्यक्ष होने के नाते यह एक जिम्मेदारी है, हमने इसे अपने ऊपर ले लिया है। आज हमारा ध्यान दुनिया और जी–20 को सही समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करना है और यही कारण है कि जी–20 की तैयारी में, प्रधानमंत्री ने वास्तव में वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ नामक एक शिखर सम्मेलन आयोजित किया। इसलिए, हमारे पास लगभग 125 देश थे जिन्होंने शिखर सम्मेलन में विभिन्न स्तरों पर भाग लिया और उनकी चिंताओं से यह स्पष्ट हुआ कि, ये सभी विकासशील देश हैं और विकासशील देशों की उनकी चिंताओं को, आज हमने इन्हें आगे रखने की कोशिश की, उदाहरण के लिए, आप जानते हैं कि एक चिंता है, विकासशील देशों को सतत विकास लक्ष्यों तक पहुँचना है। सामान्य और साधारण लोगों के लिए सतत विकास लक्ष्य, मुझे कहना चाहिए, स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, बिजली, स्वच्छता है। आप जानते हैं, एक उचित सभ्य जीवन क्या है। अब, आर्थिक दबाव, आर्थिक तनाव के कारण आज कई देश सतत विकास लक्ष्यों पर अपनी प्रगति जारी रखने में सक्षम नहीं हैं। दूसरा मुद्दा है वो जलवायु है। हर कोई इसे स्वीकार करता है कि जलवायु एक बहुत बड़ा मुद्दा है लेकिन जलवायु से निपटने के लिए, आपको संसाधनों की आवश्यकता है। अब, विकसित देश संसाधनों का वादा करते रहते हैं लेकिन वे वास्तव में अपने वादे को अक्सर पूरा नहीं करते हैं। तो, आज हम हरित वित्तपोषण कैसे प्राप्त करें क्योंकि जलवायु से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले लोग विकासशील देश के होंगे? तो, यह भी आज एक बड़ा मुद्दा है। इसलिए, मैं आपको दो उदाहरण दे रहा हूँ। लेकिन ऋण भी यहां एक मुद्दा है। आज बहुत से देशों पर बहुत ज्यादा कर्ज़ है, वे कर्ज़ नहीं चुका सकते। उनमें से कई देशों को व्यापार में व्यवधान का सामना करना पड़ रहा है, देश अपनी ऊर्जा के लिए भुगतान नहीं कर पा रहे हैं, उनमें से कई देशों को खाद्य आयात की समस्या है। इसलिए, ये वाकई बहुत महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं और भारत ने इन समस्याओं को बातचीत का केंद्र बनाने का बीड़ा उठाया है। कमरे के अंदर जो कुछ हो रहा है, उसका एक हिस्सा यह भी है। दूसरा हिस्सा यह है कि प्रधानमंत्री आज किस तरह महसूस करते हैं कि लोगों को जी–20 से जुड़ना चाहिए। यहाँ तक कि आकाशवाणी भवन में भी, मैं आज जी–20 का लोगो, जी–20 का पोस्टर देखता हूँ। आप भारत में कहीं भी जाएँ, भारत के हर शहर में, भारत के किसी भी सार्वजनिक स्थान पर, लोग आज खुद को जी–20 से जोड़ रहे हैं। वे जानते हैं कि यह बहुत बड़ी बात है, वे जानते हैं कि यह भारत के लिए अपनी वैश्विक

उपस्थिति दर्ज कराने का एक सुनहरा अवसर है। यह भारत के सभी क्षेत्रों और शहरों को बढ़ावा देने का एक तरीका भी है।

अपनी बात को प्रदर्शित करना।

हां, क्योंकि हम जी–20 को 5 बड़े शहरों में कर सकते थे, लेकिन हम 60 शहरों में कर रहे हैं, हम सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कर रहे हैं। इसलिए, पूरा विचार भारत को प्रदर्शित करना है, साथ ही भारतीय जनता को यह समझाना है कि यह आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है, विदेश नीति आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है, केवल जी–20 ही नहीं, हम और अधिक योगदान देने के लिए क्या कर सकते हैं। इसलिए, इसे ही वे जनभागीदारी कहते हैं। जनता को इसके साथ जुड़ना चाहिए। प्रधानमंत्री जी बार–बार दोहराते हैं कि आप जी–20 में जो कर रहे हैं, उनको आप मीटिंग, सरकारी कॉन्फ्रेंस में न करें और लोगों को जुड़ने का अवसर दें। और मैं 1977 से कूटनीति में हूँ, यह 46 साल है। मैंने अतीत में ऐसा कभी नहीं देखा कि सामान्य नागरिक कहे, अच्छा वो विदेश नीति कोई और नहीं करता है, दूर की बात है, दूर का आदमी है, मुझे क्या लेना देना। इस बार ऐसा नहीं है।

महोदय, अपने जी–20 प्रेसीडेंसी के दौरान, भारत ने उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया है, जिनमें संरचनात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता है, जैसे वैश्विक व्यापार में एमएसएमई का निहितार्थ, श्रम अधिकारों को बढ़ावा देना, अंतर्निहित कृषि खाद्य श्रृंखला, मूल्य प्रणाली और नीली अर्थव्यवस्था का निर्माण। महोदय, इन फोकस क्षेत्रों के पीछे क्या विचार या तर्क है?

इसे समझने के लिए, आपको जी–20 के इतिहास पर थोड़ा नज़र डालनी होगी। शुरू में, जी–20 की शुरुआत इसलिए हुई क्योंकि वैश्विक वित्तीय संकट था। उस समय, 2008 तक, सात देश, जिन्हें जी–7 कहा जाता था, वे वैश्विक वित्तीय मामलों से निपटते थे। लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि अब वैश्विक अर्थव्यवस्था बढ़ गई है, और अधिक देशों को शामिल करने की आवश्यकता है, उनके बिना बड़े समाधान संभव नहीं हैं। फिर हर साल जब वे मिलते हैं, तो वे कुछ और देश जोड़ते हैं। आज हमारे पास लगभग 15 मंत्रिस्तरीय धाराएँ हैं। जिसमें, वित्त सबसे महत्वपूर्ण है लेकिन उदाहरण के लिए, मैं विकास धारा की अध्यक्षता करता हूँ, एक श्रम है, एक शिक्षा है, महिलाएँ हैं। तो, ये सभी मुद्दे हैं। तो, हम क्या करने की कोशिश कर रहे हैं? हम विभिन्न क्षेत्रों को देखने की कोशिश कर रहे हैं और यह देखने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या जी–20 किसी क्षेत्र में सहमत है, आपने कहा कि एमएसएमई या कहें कि श्रम, अगर उस पर जी–20 की सहमति है, तो मैं कहूँगा कि ऊर्जा, चर्चा का बहुत बड़ा विषय है, यह जी–20 के कुल समाधान में सहायक होगा। तो, जब सितंबर में नेता लोग आएंगे और उनकी जब भी सहमति बनेगी, उस पूर्ण सहमति में, इसका भी एक मूल्य होगा। लेकिन आपको यह भी समझना चाहिए, जी–20 से परे भी जीवन है। इसलिए, मैंने उदाहरण के लिए आपसे सतत विकास लक्ष्यों का उल्लेख किया। अब SDG इसको कहते हैं। अब SDG की एक शिखर बैठक सितंबर में होने वाली है। यदि जी–20 SDG के मुद्दों पर सहमत होता है, तो मुख्य बैठक होने पर इसका SDG पर प्रभाव पड़ता है। यदि जी–20 महिला–नेतृत्व वाले विकास पर सहमत होता है, तो इसका प्रभाव पड़ता है। जलवायु कार्रवाई में COP 28 होगा, हम UAE में मिलेंगे। जलवायु के संबंध में जी–20 में हम जो निर्णय लेंगे, वह सीधे COP में होने वाली मुद्दों को प्रभावित करेगा। तो, एक हिस्सा यह है कि आप जी–20 में काम कर रहे हैं, आप विभिन्न गतिविधियों को आगे बढ़ा रहे हैं। उसका आप एक निचोड़ बनाएंगे। उस निचोड़ को हम जी–20 के नेताओं की सर्व सहमती से हम दुनिया के सामने प्रस्तुत करेंगे। परंतु

जी–20 की जो अलग–अलग विचार धाराएं हैं, भावनाएं हैं, उपलब्धियां हैं, जो अपने–अपने डोमेन में कुछ और अगर दुनिया में कुछ हो रहा है, तो उस पर भी इसका प्रभाव होगा। जी–20 को एक किस्म से एक साल के कार्यक्रम के मूल्यांकन में देखा जाना चाहिए। जो भी इसकी अध्यक्ष लेता है, उनकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। और ये जिम्मेदारी जो है, ये एक साल के लिए नहीं है, क्योंकि जी–20, 3 के समूह में काम करता है। आप आने वाले अध्यक्ष हैं, अभी के अध्यक्ष हैं, पिछले के अध्यक्ष हैं। तो आप इसको 3 साल के लिए एक किस्म से गाइड कर सकते हैं और हमारी खुशकिस्मती है कि आगे वाला जो अध्यक्ष है वो ब्राज़ील है। तो, यह भी हमारे लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि आप जानते हैं कि हम ब्रिक्स और आईपीएसए के साथ जुड़े हुए हैं। ये पूरा जी–20, देश में जो हो रहा है, जिस तरह से हो रहा है, हम कहते हैं ना कि हमें भारत को विश्व के लिए तैयार करना चाहिए, आपको विश्व को, भारत के लिए तैयार करना होगा। विश्व के लोगों को कम से कम भारत के 60 शहर देखने चाहिए। भारत के लोगों को जी–20 के इन सभी लोगों को देखना चाहिए क्योंकि इसमें 20 देश हैं, 9 अतिथि हैं, 14 अंतर्राष्ट्रीय संगठन हैं लेकिन हम कई अन्य प्रतिनिधियों को भी बुला रहे हैं। इसलिए, अंततः लगभग 100 देश आएंगे।

आपके मंत्रालय का मुख्य ध्यान पड़ोसी देशों पर रहा है। ऐसा कहा जाता है कि पड़ोसी देशों में विदेशी परियोजनाओं में जमीनी स्तर पर पहले से कहीं अधिक काम हुआ है। क्या आप विस्तार की प्रकृति के बारे में विस्तार से बता सकते हैं?

देखिए, आप जो कह रहे हैं, सबसे पहले, यह सच है कि यदि आप हमारे किसी भी पड़ोसी देश नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, मालदीव, यहाँ तक कि म्यांमार को देखें, तो हमारी डिलीवरी में बहुत बड़ा सुधार हुआ है। भारत में घरेलू डिलीवरी में सुधार हुआ है। तो, यदि आज दिल्ली या कोलकाता या उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश या तमिलनाडु में आपकी सड़क निर्माण बेहतर है, आपकी मेट्रो निर्माण बेहतर है, तो, यदि आप भारत में चीजों को बेहतर बनाने के लिए उस तरह का ध्यान और प्रयास और संसाधन दे रहे हैं, तो यह स्वाभाविक है कि यह भारत से बाहर भी होगा। प्रधानमंत्री ने स्वयं प्रगति नामक एक मूल्यांकन कार्यक्रम चलाया है, जिसे उन्होंने 2014 की शुरुआत में ही शुरू कर दिया था। प्रगति में क्या होता है, वह 20 परियोजनाओं की एक सूची चुनते हैं। हालांकि 20 परियोजनाएं, उन 20 परियोजनाओं से जुड़े सभी लोगों को, उन्हें वीडियो लिंक पर होना होता है और वह कहते हैं कि ठीक है, कृपया मुझे समझाएं कि ये आगे क्यों नहीं बढ़ा प्रभाव। अब, इस मानसिकता के साथ, हम लोग विदेश मंत्रालय में भी काम करने लग गए हैं। अब जैसे मैं खुद नियमित रूप से कहता था, अच्छा चलो बांग्लादेश, के लिए शनिवार को बैठते हैं और जो बांग्लादेश के लंबित प्रोजेक्ट हैं, कृपया मुझे बताएं कि हम कहां हैं। फिर अगले महीने मैं कहूंगा, ठीक है, चलिए नेपाल में जाते हैं। तो, एक तरीका ये भी है। तीसरा नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी ही है। देखिए, नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी क्या है? ये देश जो है, हमारे पड़ोसी हैं। भारत आगे बढ़ रहा है। मान लीजिए, आपकी गली में, आपका घर अच्छा चल रहा है, आप यह भी चाहते हैं कि गली के बाकी लोग भी खुश रहें और कम से कम आपकी सफलता का लाभ उठाएँ। इसलिए, आज हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारे पड़ोसियों को लगे कि अरे! हमारे लिए बहुत अच्छा है, भारत आगे बढ़ रहा है, हमें भी लाभ मिल रहा है।

****

रविन्दर सिंह
प्रशासन अनुभाग

तेजाब

चेहरे पर तेजाब फेंकने के बाद लड़की ने लड़के से ये कहा–
एक लड़की ने एक लड़के का प्यार कबूल नहीं किया तो लड़के ने लड़की के मुंह पर
तेजाब फेंक दिया तो लड़की ने लड़के से चंद पंक्तियां कही आप इन पंक्तियों को जरूर पढ़ना।
चलो, फेंक दिया सो फेंक दिया
अब कसूर तो बता दो मेरा
तुम्हारा इज़हार था, मेरा इन्कार था।
बस इतनी सी बात पर फूंक दिया तुमने चेहरा मेरा......

गलती शायद मेरी ही थी,
प्यार तुम्हारा देख न सकी
इतना पाक प्यार था कि उसको मैं समझ ना सकी....
अब अपनी गलती मानती हूं
क्या तुम अब अपनाओगे मुझको
क्या अब अपना बनाओगे मुझको
क्या अब सहलाओगे मेरे चेहरे को?
जिन पर अब फफोले है।
मेरी आंखों में आंखें डालकर देखोगे
जो अब अंदर धंस चुकी है।
जिनकी पलके सारी जल चुकी हैं।
चलाओगे अपनी उंगलियां मेरे गालों पर
जिनपर पड़े छालों से अब पानी निकलता है।
हां, शायद तुम कर लोगे तुम्हारा प्यार तो सच्चा है ना?
अच्छा एक बात तो बताओ ये ख्याल "तेजाब" का कहां से आया?
क्या किसी ने तुम्हें बताया या ज़ेहन से तुम्हारे खुद ही आया।
अब कैसा महसूस करते हो तुम मुझे जलाकर? गौरान्वित या पहले से ज्यादा और भी
मर्दाना तुम्हें पता है सिर्फ मेरा चेहरा जला है। जिस्म अभी पूरा बाकी है।

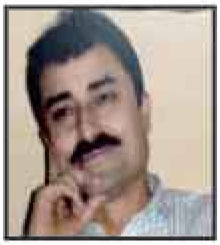

रविन्द्र कौल 'रवि'
सेवा निवृत प्रभारी
संस्कृत एकांश

भारतः जी–20–वसुधैव कुटुम्बकम

ए हिमाला ऐ फसील–ए–किश्र–ए किशवरे हिन्दुस्तान
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आसमां

अल्लामा इक़बाल द्वारा रचित नज़्म "हिमाला" का ये शेर हिमालय पर्वत की अज़्मत बयान करता है। हिमालय क्यवल एक ऊंचा पर्वत ही नहीं ये प्रतीक है अपनी महानता और महिमा का। भारत देश की इसी महानता और महिमा का जब आकाश भी झुक कर अभिवादन करता है। तो इससे ये बात साफ होती है कि यह देश मात्र देश ही नहीं बल्कि एक ऐसी शक्ति है जिस के सामने आकाश भी नतमस्तक होता है। क्या है इस महानता का राज़? भारत इस पृथ्वी पर एक ऐसा देश है जो विशेषकर अपने अध्यात्म/धार्मिक सहनशीलता एवं सक्षम मानव संसाधनों इत्यादि के लिये पूरी दुनिया में जाना जाता है। विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने की हैसियत से भी इसका अपना एक विशेष स्थान है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत पूरी दुनिया में अर्थव्यवस्था के लिहाज़ से दुनिया की तीसरी सब से बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। शायद ही दुनिया का कोई ऐसा देश होगा जो भारत की तरफ उम्मीद की नज़रों से देखने वाले देशों की फहरिस्त में ना हो, क्योंकि भारत के पास समाधान और विकल्प मौजूद है। इतना ही नहीं भारत सारी धरती पर आबाद सृष्टि को अपने समेत उस रचनाकार की रचना मानता है जिस ने हर किसी को एक इंसान के रूप में इस संसार में पैदा किया। इसी संदर्भ में भारत सारे संसार को एक कुटुम्ब की नज़र से देखता है। यह भारत भूमि की पावन धरा ही है जहां पेड़ों/ पत्थरों/पहाड़ों/पानी/नागों/ चश्मों/पंछी/पक्षियों/जानवरों/नदी/नालों व इत्यादि की निष्ठा के साथ पूजा होती है और जब बात इंसानों की आती है फिर क्या कहना। विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले इंसान का आदर सत्कार करना भारत अपना बुनियादी कर्तव्य मानता है। भारत दुश्मन तक से भी नफरत से पेश नहीं आता। बल्कि उसकी भलाई की कामना करता है। भारत किसी से भी बैर नहीं करता और ना ही किसी के विरूद्ध कोई रंजिश ही पालता है। भारत का मूलमंत्र है–"सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे संतु निरामया" यानि सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों। जब भारत का उद्देश्य ही जगत कल्याण हो तो फिर भेदभाव की किसी भी प्रकार की कोई गुंजाईश ही नहीं रहती। कोई छोटा हो या बड़ा, कमजोर हो या शक्तिशाली, अमीर हो या गरीब, भारत हर किसी के साथ समानता से पेश आता है। विश्व के किसी भी हिस्से में कोई दुर्घटना पेश आए या कोई प्राकृतिक संकट आए भारत विलंब किए बिना मदद करने के लिए सबसे पहले आगे आता है। भारत का मानवता के मूल्यों के प्रति बेहद समान और समर्पण एक जीती जागती मिसाल है। भारत ने "विश्व गुरू" की उपाधियों ही अर्जित नहीं की हैं। इस के पीछे महान देश का त्याग, समर्पण, न्याय, मानवता, समानता, निष्ठा, लगन एवं उदारता भी है। बेसहारों को गले लगाना और दीनदुखियों की आस बनकर उन की निष्काम सेवा करना इस महान देश की पहचान है, यह तो हमारी सभ्यता है। जो समय

की करवटों के बावजूद अपने वजूद को हर हाल में रवां दवां रखने में सफल होती है। भारत केवल अपना ही ख़्याल नहीं रखता, दूसरों का भी समान रूप से ख़्याल रखना इसके स्वभाव में रचाबसा है। विश्व के किसी भी हिस्से में संकट के समय "संकट मोचन" बन कर उस क्षेत्र में आशा की एक नई किरण लेकर आता है। कोविड के समय भारत ने दुनियाभर के देशों को वैक्सीन सप्लाई करके मानवता की एक ऐसी मिसाल कायम की जो रहती दुनिया तक सूर्य के प्रकाश की मानंद जिंदगियों में एक उजाले का काम देगी। भारत के इस निस्वार्थ कदम की बदोलत अनगिनत बेशकीमती जानें बचाने में मदद मिली। भारत "वसुधैव कुटुम्बकम" के सिद्धांत पर अमल करने वाला देश है। यह पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है। जगत कल्याण और मानव कल्याण से संबंधित किसी भी अंतरराष्ट्रीय पहल में भारत पेश रहा है और यह सिलसिला जारी है। अगर शीत युद्ध कब का खत्म हो चुका है परंतु आज भी बड़े ताकतों के बीच में उत्पन्न तनाव की स्थिति बनी हुई है। सब अपनी धौंस दबाव दिखा कर अपनी प्रधानता और वर्चस्व कायम करना चाहते हैं। अभी कोविड महामारी अपनी आखिरी सांसें लेने तक का नाम भी नहीं ले रहा था कि रूस ने यूक्रेन पर धावा बोल दिया। इस तरह एक और संकट उत्पन्न हुआ। जो अभी भी जारी है। पूरी दुनिया किसी ने किसी प्रकार से चिंताजनक परिस्थितियों से ग्रस्त है। आर्थिक संकट, सियासी उथल–पुथल, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, माइग्रेशन, आंतरिक अशांति, आतंकवाद, साइबर क्राइम एवं नारकोटिक्स मेन्स जैसी समस्याओं से आज संसार जूझ रहा है। इन परिस्थितियों में विश्व की सारी नज़रें भारत पर टिकी हुई हैं, क्योंकि भारत समाधान देता है जो अपने कुशल एवं निपुण मानव संसाधनों की बदोलत किसी भी मसले को हल करने की सलाहयत रखता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत मुख्य भूमिका निभाता आ रहा है और आज भारत का कद राष्ट्रों के समुदाय में काफी बढ़ चुका है। कोई भी अंतरराष्ट्रीय फोरम हो भारत इन में अपना लोहा मनवा रहा है। जितनी आवश्यकता भारत को दूसरे देशों की है, उससे कहीं गुणा ज्यादा आवश्यकता इन देशों को भारत की है। इस समय भारत की आबादी 1 अरब 43 करोड़ से भी ज्यादा है। यह ना सिर्फ एक तादाद है बल्कि भारत की असली शक्ति, जिसका संकल्प अटल और अडिग है। बजा तौर पर कहा गया है कि भारत एक ऐसा देश है जहां अवसर ही अवसर और मौके ही मौके हैं। यह एक सत्य है कि वर्तमान सरकार ने जो दूरगामी और इंतिहाई अहम सुधार किए हैं उनकी बदोलत ना सिर्फ भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा बल्कि वैश्विक कुटुम्ब की अगुवाई करने में भी सबसे आगे होगा। यह भारत ही तो है जिसकी सक्रिय पहल के सबब अंतरराष्ट्रीय सतह पर ऐसे बहुत सारे रचनात्मक कदम उठाए गए जिन से आज हर किसी को लाभ मिल रहा है। भारत की सक्रिय भूमिका आज किसी भी अंतरराष्ट्रीय फोरम में अपेक्षित परिणाम सुनिश्चित करती है। जी–20 या ग्रुप ऑफ 20 एक अंतर–सरकारी फोरम है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था से संबंधित बड़े–बड़े मुद्दे हल करने के प्रयास करता है। इन मुद्दों में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन को कम करना और सतत विकास शामिल हैं। इस ग्रुप में 19 देश और यूरोपियन यूनियन शामिल है। यह फोरम अंतरराष्ट्रीय आर्थक सहयोग के लिए एक प्रधान फोरम है। जी–20 वैश्विक आर्थिक स्थिरता और सतत विकास को आकार देने में एक अहम किरदार अदा करता है। इस ग्रुप में दुनिया की कई सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं, जिनमें अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी और भारत भी शामिल हैं। एक स्पष्ट योजना और विकासोन्मुख दृष्टिकोण के साथ भारत का उद्देश्य नियमों पर आधारित व्यवस्था, शांति और मुंसिफाना विकास को फरोग देना है। भारत का उद्देश्य यह भी है कि संरचनात्मक परिवर्तन के लिए संबंधित क्षेत्रों पर फोकस किया जाए।

जी–20 का गठन 1999 में हुआ। विश्व में कई आर्थिक संकटों के कारण इस तरह

के ग्रुप का कयाम अमल में लाए जाने की ज़रूरत महसूस की गई। सन् 2008 से साल में कम अज़ कम एक बार इस ग्रुप की शिखर बैठक का आयोजन किया जाता है। इसके सदस्य देश बारी–बारी से इसका आयोजन करते हैं। शिखर वार्ता में अहम मुद्दों पर विचार–विमर्श तो होता ही है साथ में इन देशों के दरम्यिान दोस्ती और आपसी मेल–मिलाप के जज़्बे को मज़बूत करने का एक अनमोल अवसर भी प्राप्त होता है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक इस समूह का कद बढ़ता ही जा रहा है अगरचि इस की आलोचना भी की जाती है। सत्य यह है कि आलोचना के बावजूद यह ग्रुप अपना असरो रसूख कायम करने में कामयाब रहा है। दिसम्बर 1999 में बर्लिन में अपनी पहली मीटिंग के बाद हर देश अपनी अपनी बारी पर इस शिखर वार्ता की मेज़बांदारी करता है। भारत ने जी–20 की प्रेसिडेंसी 15 और 16 नवम्बर, 2022 को इंडोनेशिया में बाली के मकाम पर शिखर मीटिंग के समापन समारोह में प्राप्त की। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति JOKO WIDODO ने तालियों की गड़गड़ाहट में जी–20 की अध्यक्षता भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को सौंपी। इस अंतरराष्ट्रीय संगठन में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चाईना, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, ईटली, जापान, मेक्सिको, साउथ कोरिया, रशिया, साउदी अरब, साउथ अफ्रीका, तुर्कि, यूनाइटेड किंगडम, यूनाइटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका, यूरोपियन यूनियन सदस्य हैं।

इस संगठन के यह सदस्य मिल कर वैश्विक अर्थव्यवस्था से संबंधित अहम मामलों पर चर्चा करते हैं। विकसित और प्रगतिशील देश विस्तृत रूप से अर्थव्यवस्था पर विचारों का तबादला करते हैं। भारत को उस समय पर अध्यक्षता सौंपी गई जब कोविड के बाद की दुनिया में काफी चुनौतियों का मुकाबला करना पड़ रहा है। इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि भारत मात्र ऐसा देश है जिस ने चुनौतियों को अवसरों में बदल कर पूरे विश्व को यह संदेश दिया कि चुनौतियां भारत की विकास यात्रा में रूकावटें पैदा नहीं कर सकती हैं, क्योंकि हमारे मानव संसाधनों की प्रचुरता / बहुलता और कुशल नेतृत्व पैदा होने वाली किसी भी परिस्थिति का मुकाबला करने में सक्षम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 8 नवम्बर, 2022 को जी–20 लोगो लान्च किया। उन्होंने जी–20 थीम का भी अनावरण किया। यह थीम है "वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर"। यह थीम संस्कृत फ्रेज़ "वसुधैव कुटुम्बकम" से प्रेरित है जिसका अर्थ है सारा संसार एक ही परिवार है और जी–20 इसी थीम पर फोकस करेगा।

जी–20 की अध्यक्षता संभालने के बाद सारा भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में इसे कामयाब और यादगार बनाने के लिये काम में जुट गया। क्योंकि यह एक ऐसा अवसर मिला जो ना सिर्फ विश्व के 20 देशों जिन में दुनिया की कई सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं भी शामिल हैं, की मेज़बानी करके भारत को दुनिया में ऊंचा मुकाम प्रदान करेगा, बल्कि हमारी प्रगति में भी और इज़ाफा हो जाएगा। जब भी भारत कोई बड़ा आविष्कार करता है या कोई बड़ा कारनामा अंजाम देता है तो इन से हासिल होने वाले फायदों को मिल कर प्रयोग में लाने का नेक इरादा रखता है, ताकि दूसरों को भी इस का लाभ प्राप्त हो। जब हम दूसरों का कल्याण चाहते हैं तो इस से संतुष्टि और अनुभव का आनंद हासिल हो ही जाता है। साथ में हमें और अधिक अच्छा करने की प्रेरणा भी मिलती है। रंग–बिरंगे खिले हुए फूलों के इस सुन्दर रूपी भारत में विभिन्न धर्मों, भाषाओं और नस्लों आदि के लोग आबाद हैं। जो समान अधिकारों की नेमत से मालामाल हैं। सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास और सब का प्रयास भारत का एक बुलंद नारा है। इसी के आधार पर हमारी तरक्की की राहें खुलती हैं और नए इमकानात पैदा होते हैं। हमारे विकास और इतिहाद या एकता की कुंजी यही चार मूल सिद्धांत हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने खूब कहा– "सबका साथ, सबका

विकास, सबका विश्वास और अब सबका प्रयास हमारे हर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये बहुत महत्वपूर्ण है।''

यही सिद्धांत मानवता के भी प्रतीक हैं इसी जज़्बे के साथ भारत ने हर देश के साथ अपने बाहमी संबंध मज़बूत किए हैं। ''सब का'' शब्द एक प्रमाण है भारत की नेक नीति का और सत्य का। यह शब्द अकासी करता है भारत की उदारता का। ''सब का'' शब्द दर्शाता है भारत की सामाजिक एवम धार्मिक सहनशीलता और यही शब्द है भारत की एकता और अखंडता का तेज प्रकाश। कुछ भी हो, दुनिया में हर हाल में शान्ति बनी रहनी चाहिए। लड़ाई झगड़ों से नहीं बल्कि आपसी वार्तालाप, निष्कपटता, निश्छलता और सत्यता से किसी भी समस्या का समाधान बिल्कुल संभव है। हमारे महान देश भारत ने ही सारे जगत को सत्य, अहिंसा, एकता और शान्ति का दरस दिया। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने सारे संसार को सत्य और भाईचारे का पाठ पढ़ाया। इस पृथ्वी पर शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहां भारतीय ना रहता हो। एक भारतीय जितना लगाव अपनी जन्मभूमि से रखता है उतना ही लगाव अपनी कर्मभूमी से भी रखता है। भारतीय संस्कार आपसी बैर नहीं बल्कि आपसी प्रेम और मित्रता सिखाते हैं। तुर्की में पेश आए जलज़ले हों, श्रीलंका का खतरनाक आर्थिक संकट हो, यूक्रेन से दूसरे देशो के नागरिकों को सुरक्षित निकालना हो या अफगानिस्तान को भुखमरी से बचाने के लिए अनाज भेजना हो भारत ने दुनिया के सभी लोगों को अपने ही परिवार का एक हिस्सा मान कर हमेशा सहायता की है। भारत भेदभाव नहीं, समभाव का मनोभाव रखता है। दूसरों के दुख–दर्द अपने दुखदर्द समझ कर मदद करने के लिए अपने आपको समर्पित करता है। इतिहास गवाह है कि भारत ने आज तक किसी पर भी आक्रमण नहीं किया है। ना ही किसी की क्षेत्रीय संप्रभुता का ही उल्लंघन किया है। मगर यह भी एक सत्य है कि भारत अपनी और अपनी सीमाओं की रक्षा करना भी जानता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है ''चाहे जी–20 अध्यक्ष के रूप में या नहीं हम दुनियाभर में शांति सुनिश्चित करने के हर प्रयास का समर्थन करेंगे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सबका साथ सबका विकास मॉडल दुनिया के कल्याण के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की जी–20 अध्यक्षता का थीम वसुधैव कुटुम्बकम सिर्फ एक नारा नहीं बल्कि एक व्यापक दर्शन भी है जो देश के सांस्कृतिक लोकाचार से निकला है......''

भारत की जी–20 अध्यक्षता के अंतर्गत विश्व भारत के और करीब आ गया है और भारत की भारतीयता का दिल से अनुभव करना आरंभ किया है। विश्वसनीयता बीच में सत्यवादिता और सत्यनिष्ठा भारत की पहचान के हॉलमार्क हैं। रोज़ बरोज़ भारत का राष्ट्रों के समुदाय में रूतबा बढ़ना उस ''ईमानदारी'' का फल है जिसके आधार पर यह महान देश अपनी हस्ती कायम ओ दायम रखे हुए हैं। अपनी कथनी और करनी में कोई फर्क न रखने वाला महान भारत करीब हर देश का ट्रेड पार्टनर है। भारत अपनी बात का धनी है। यह जो कहता है वही करता भी है। इसके ''कौल ओ फेल'' में कोई तज़ाद नहीं है। यही एक खूबी है जो पूरी दुनिया के निवेशकों को भारत में निवेश करने के लिए खींच कर लाती है। यहां इन उद्योगपतियों और निवेशकों को सरमायाकारी करने के लिये हर लिहाज से एक साज़गार माहौल मिलता है। यह दिल से अपना निवेश करते हैं। साथ ही इन सरमायाकारों को बहुत बढ़िया बुनियादी ढांचा भी उपलब्ध रहता है। निवेश के लिये एक अनुकूल वातावरण पाकर यह बड़े–बड़े प्रोजेक्टस हाथ में लेते हैं। जी–20 समिट की बदोलत भारत अंतरराष्ट्रीय लेवल पर अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताएं सामने लाने में सफल रहा है। साथ ही पारस्परिक संबंधों को भी एक नई ऊर्जा मिली है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति देखकर इन देशों के प्रतिनिधि भारत की प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सके।

भारत की जी–20 अध्यक्षता के अंतर्गत देश के 50 शहरों में जी–20 प्रोग्रामों का आयोजन किया गया। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कामरूप से लेकर पोरबंदर तक सारा देश भारत की जी–20 अध्यक्षता के रंग में रंग गया। पूरा देश इस समिट को सफल, ऐतिहासिक और यादगार बनाने में जीजान से जुट गया। विशेष बात यह है कि जहां–जहां भी जी–20 के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किए गए वहां–वहां की लोकल संस्कृति और सभ्यता के दर्शन कर विदेशी डेलिगेट स्थानीय स्वागत से बेहद मुतासिर हुए। कई जगहों पर जी–20 डेलिगेटों का पारम्परिक तरीके से स्वागत किया गया। भारत ''अतिथि देवो भव'' में विश्वास रखता है। ना सिर्फ मेहमानों की खातिरदारी करना बल्कि उनका मान–सम्मान करना और उन्हें ऊंचा स्थान प्रदान करना भारतीय संस्कारों का एक अभिन्न अंग है। यह विदेशी डेलिगेट भारत की अपनी इस यात्रा को शायद कभी नहीं भूलेंगे। यह जरूर अगली उस घड़ी के इंतज़ार में होंगे जब इन की पुनः भारत यात्रा का कार्यक्रम बन सके। यह विदेशी डेलिगेट जहां भारत के कल्चर, रहन–सहन, आबओ हवा, पर्यटन, खानपान, व्यवहार, दस्तूर और तौर–तरीकों से किसी हद तक परिचित हुए होंगे मगर यह जी–20 गेस्ट यहां की आध्यात्मिक धरोहर का आनंद ज़रूर प्राप्त कर चुके होंगे। वाराणसी के दश्वमेव घाट पर गंगा आरती में शामिल होकर इन प्रतिनिधियों ने यहां के आध्यात्मिक आनंद का अनुभव जरूर किया होगा।

भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने जी–20 अध्यक्षता और इसके वैश्विक प्रभाव पर नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में संबोधन करते हुए कहा, ''यह कई मायनों में मुखतलिफ है क्योंकि देश ने इसका संचालन ना सिर्फ एक आधिकारिक कार्यक्रम के रूप में किया बल्कि राष्ट्रीय उत्सव के तौर पर संचालन किया। उन्होंने कहा कि भारत ने अध्यक्षता एक ऐसे समय पर संभाली है जब देश को वैश्विक स्तर पर इसकी आर्थिक उपलब्धियों, तकनीकी और डिजिटल उन्नतियों एवं प्रतिभा पूल के लिए मान्यता प्राप्त हुई है।''

भारत की जी–20 अध्यक्षता में देश के विभिन्न राज्यों में जो भिन्न–भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए उनमें ज़ेरे बहस आए मुद्दों पर विस्तार से चर्चा तो हुई ही साथ में डेलिगेटों को विशेष इलाके में निवेश आदि के लिए अवसरों के बारे में जानकारी हासिल करने में भी मदद मिली। इतना ही नहीं इस देश की बेमिसाल विविधता से भी यह विदेशी प्रतिनिधि अपने आप को रूबरू करा सकें। अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार विरोध, स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यटन, शिक्षा, फिल्मस, पारंपरिक औषधियां, युवा मामले, डिजिटल टेक्नोलॉजी, विज्ञान, सप्लाई चेन, कृषि, श्रम, रोजगार जैसे अनगिनत क्षेत्रों को लेकर जी–20 की बैठकें हुईं। इन क्षेत्रों में चौलेंजों, रूकावटों, नई संभावनाओं और नई राहों के बारे में खूब चर्चाएं हुईं।

यह पहली बार है जब जी–20 की तीसरी टूरिज़्म वर्किंग ग्रुप मीटिंग श्रीनगर में आयोजित हुई। यह वाकई एक ऐतिहासिक दिन था, क्योंकि पूरी दुनिया की नज़रें इस पर लगी हुई थीं। यह मीटिंग्स ना सिर्फ ज़बरदस्त कामयाब रही बल्कि इसकी सफलता एक प्रेरणा लेकर आई कि ''जहां चाह वहां राह'' है। इस बैठक में पर्यटन एवं संस्कृति केंद्रीय मंत्री श्री जी.किशन रेड्डी, पीएमओ में राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह, भारत के जी–20 शेरपा, श्री अमिताभ कांत, जी–20 चीफ कॉर्डिनेटर हर्ष वर्धन श्रृंगला, सूचना एवं प्रसारण सचिव श्री अपूर्व चंद्रा और प्रसिद्ध एक्टर राम चरण और दूसरे लोगों ने भी शिरकत की। श्री जी. किशन रेड्डी ने इस अवसर पर अपने भाषण में श्रीगनर को भारत का सबसे प्राचीन और सुंदर शहर करार दिया। डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि यह आयोजन कायाकल्प और पुनर्जन्म का क्षण है। श्री अमिताभ कांत ने कहा कि, ''कश्मीर में फिल्म पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। इस मौके पर राम चरण और भारत में साउथ कोरिया के राजदूत Jae Bok chang ने नाटो नाटो गीत

पेश किया और इस पर रक्स भी किया। जम्मू एवं कश्मीर के लेफ्निेंट गवर्नर श्री मनोज सिन्हा ने इस ऐतिहासिक जी–20 मीटिंग का औपचारिक उद्‌घाटन किया। डेलिगेट्स का स्वागत करते हुए श्री मनोज सिन्हा ने कहा, "पिछले 30 वर्षों में जम्मू और कश्मीर ने आतंकवाद के कारण मुसीबत झेली। ताहम, श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने आतंकवाद का इकोसिस्टम ध्वस्त किया। उन्होंने मज़ीद कहा कि जम्मू और कश्मीर में फलता–फूलता पर्यटन भारत के बहु धार्मिक और बहु सांस्कृतिक लोकाचार की अकासी करता है।" सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री अपूर्व चंद्रा ने पर्यटकों से कहा कि वे जम्मू और कश्मीर की यात्रा करें। उन्होंने कहा कि कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बेहतर हो चुकी है और डरने का कोई कारण नहीं। उन्होंने सूचित किया कि पिछले साल 26 लाख से भी ज़्यादा पर्यटकों ने कश्मीर की यात्रा की जो एक रिकॉर्ड है।"

श्रीनगर के इस ऐतिहासिक जी–20 कार्यक्रम में 29 देशों के 60 से ज़्यादा प्रतिनिधियों ने शिरकत की। लेह में भी 26 अप्रैल से 28 अप्रैल तक वाई–20 प्री समिट आयोजित की गई। इसमें करीब 100 युवा प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस वाई–20 प्री समिट की मेज़बानीदारी लद्दाख ने की जो भारत की जी–20 अध्यक्षता में आयोजित एक और सफल कार्यक्रम का सबूत था। माननीय लेफिटनेंट गवर्नर श्री मनोज सिन्हा जी ने सही फरमाया था कि, "जी–20 मीटिंग निश्चित रूप से जम्मू और कश्मीर के लोगों को प्रेरणा प्रदान करेगी और केंद्रशासित प्रदेश के भविष्य को बनाने के लिये समाज में एक नया उत्साह और नया आत्मविश्वास पैदा करेगी।"

पृथ्वी पर स्वर्ग जैसा भारत का मुकुट कश्मीर इस कार्यक्रम को ना सिर्फ सफल बनाने में कामयाब रहा बल्कि इसके निर्विघन और शानदार आयोजन ने नई राहें खोलीं। पर्यटकों की तादाद में जब से रोज़–बरोज़ इज़ाफा हो रहा है। निवेशकों की निवेश करने की इच्छा और बढ़ गई है और सबसे बड़ी अहम बात यह है कि अमनो–अमान का माहौल 90 के दशक से पहले के समय की तरह फिर से लौटने लगा है। मकामी लोगों ने जिस प्रकार से अतिथियों का स्वागत किया और जिस जोश औ खरोश के साथ इस में भाग लिया, उसे देखकर पूरी दुनिया को यह स्पष्ट पैगाम गया कि कश्मीर में शांति की तेज़ी से स्थापना हो रही है और वह दिन दूर नहीं जब "कश्यप" की यह धरती अपनी खोई हुई साख फिर से बहाल करेगी।

कश्मीर में जी–20 टूरिज़्म ग्रुप मीटिंग यूनियन टेरेटरी के लिए एक बहुत बड़ा मौका साबित हुई और इसने पूरी दुनिया को एक स्पष्ट और सकारात्मक पैगाम भेजा।

भारत शांति का देश है। जो खुद भी अमन–ओ–सुकून से रहना चाहता है और दूसरों को भी अमन–ओ–सुकून में ज़िंदगी बसर करते हुए देखना चाहता है। इसी तरह भारत सभी देशों विशेषकर हमसाया देशों को भी खुशहाल देखना चाहता है। यह इसी प्रतिबद्धता का नतीजा है कि दिल्ली नेता घोषण–पत्र में ग्लोबल साउथ और विकासशील देशों के हित की गूंज सुनाई दी। यूक्रेन रूस युद्ध के पसमंजर में दिल्ली घोषणा–पत्र में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि आज का युग युद्ध का युग नहीं होना चाहिए।" भारत ने जी–20 शिखर वार्ता के संबंध में जो आशाएं व्यक्त की थीं वे सारी की सारी पूर्ण हुईं। शिखर वार्ता से पहले जितनी भी जी–20 मीटिंगें देशभर में आयोजित हुईं चाहे वे किसी भी विषय को लेकर आयोजित हुईं। भारत इन मीटिंगों में आम सहमति कायम करने में सफल रहा। एक उज्ज्वल भविष्य कैसा हो भारत ने इस की तैयारी को लेकर गंभीरता से पहले से ही सार्थक कदम उठाए हैं और जी–20 समिट ने इन प्रयासों को और मज़बूती प्रदान की है। जी–20 फिल्म फेस्टिवल नई दिल्ली में आयोजित किया गया। भारत के जी–20 शेरपा अमिताभ कांत ने इस फेस्टिवल का उद्‌घाटन किया। यह फेस्टिवल सत्यजीत रे की प्रतिष्ठित Pather Panchali Flim से आरंभ

हुआ। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी के कुशल नेतृत्व में एक जुट भारत ने वैसा कुछ करके दिखाया जिस को सारी दुनिया देख कर दंग रह गई। और यह था एक सफल यादगार, ऐतिहासिक, संपूर्ण अभिनव, रचनात्मक अत्याधुनिक और परिणाममुखी जी–20 शिखर सम्मेलन का शानदार आयोजन।

ना सिर्फ भारत, सारे संसार की निगाहें इस पर टिकी थी। एक साल से भी ज्यादा मुद्दत से चली आ रही तैयारी ने उस समय अपना जलवा बिखेरना आरंभ किया जब 7 सितम्बर से ही जी–20 देशों के राज्य प्रमुख, सरकार प्रमुख आदि ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पहुंचना शुरू किया। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली का सारा क्षेत्र दुल्हन की तरह सजा था और दिल्ली दुनिया का शक्ति केन्द्र बनने वाली थी। लोगों के चेहरों पर खुशियां, माहौल में तरो–ताज़गी, पेड़ों की एक नई बहार, पत्तों की एक नई सरसराहट, पंछियों का आनंददाई मधुर संगीत, दीवारों की दिल को छूने वाली तस्वीरें, इमारतों की सच्ची मुस्कुराहट, सड़कों की सुबुरक रफ्तार और समय का रोहिणी जैसा नक्षत्र जी–20 के सफल आयोजन के संकेत थे। इतना ही नहीं दिल्ली नगर जो अपने पॉल्यूशन के लिए भी जाना जाता है अपने प्रदूषण को नियंत्रण में रखने के उपायों में ही लगा था कि अचानक इन्द्रदेव महाराज जी ने प्रसन्न होकर अपनी वर्षा से ना सिर्फ प्रदूषण को साफ कर दिया बल्कि राजधानी को कश्मीर जैसे स्वर्ग में तबदील कर दिया और जब तक कि शिखर वार्ता समाप्त ना हुई तब तक इन्द्रदेव ने सारी सिचुएशन को पूरी तरह से नियंत्रित रखा। दिल्ली के प्रगति मैदान का "भारत मंडपम" इस खुशनुमा मौसम में वाकई एक फिरदोस से कम न था। जहां दिलकश और रंग–बिरंगी रोशनियों का ज्योतिर्मय और प्रकाशमान समां एक नई फ़रहत और ज़ीनत के सामान फराहम कर रहा था और आकाश से बातें करने वाले फव्वारे अछूती सुंदर वादियों में बरसात की झाड़ियों के सहर–अंगेज दृश्यों से कम ना थे। इसी "भारत मंडपम" में विश्व के दिग्गज नेता एकत्रित हुए। 9 और 10 सितम्बर यानि शनिवार और रविवार यह बहुचर्चित शिखर वार्ता मुनअक़िद हुई।

यूएस प्रेसिडेंट जो. बाइडन, यू.के. पी. एम. रिषी सुनक, फ्रेंच प्रेसिडेंट इमैनुएल मैक्रों, जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज़, इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीज़, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यूं सुक येओल, जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा, मॉरिशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जुगनाथ, चाइना के प्रधानमंत्री ली कियांग, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो, तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोआन, इज्पिट के राष्ट्रपति अब्दुल फतेह अल सिसि, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, सउदी अरेबिया के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान अल सौद, यूएई के राष्ट्रपति दरी दीजिस शेख मोहम्मद बिन ज़ैद अल–नहयान, ब्राज़ील के राष्ट्रपति लुईज़ इंसियो लूला दा सिल्वा इत्यादि ने भी इसमें शिरकत की।

शिखर वार्ता के 3 सेशन रखे गए थे। पहले सेशन का विषय था एक पृथ्वी, दूसरे सेशन का विषय था एक कुटुंब और तीसरे और अंतिम सेशन का विषय था एक भविष्य। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सारे सेशनों की अध्यक्षता की। दो दिन की शिखर वार्ता में ऐतिहासिक फैसले किए गए। अफ्रीकी यूनियन को 18वें जी–20 में परमानेंट मेम्बरशिप देकर एक बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया गया और इस का श्रेय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को ही जाता है जिनकी पहल कामयाब हुई। अफ्रीकी संघ 55 मेम्बर स्टेट्स पर मुशतमिल है। भारत की अध्यक्षता में इस सफल प्रयास की बदोलत अफ्रीकी महाद्वीप में ना सिर्फ खुशी की लहर दौड़ गई बल्कि इस महाद्वीप में आबाद देशों के लोगों की जिंदगियों में एक नई जान पैदा हो गई। यह महाद्वीप ना सिर्फ गरीबी का शिकार है, इसकी आवाज तक किसी भी अंतरराष्ट्रीय फोरम में ना के बराबर थी।

अफ्रीकी महाद्वीप जहां कुदरती वसीलों से मालामाल है वहीं यह गुरबत की मार भी झेल रहा है। जी–20 जैसे अत्याधिक प्रभावशाली फोरम में जगह पाकर अब शायद अफ्रीकी महाद्वीप में एक उज्जवल भविष्य की उम्मीद की जा सकती है। अफ्रीकी यूनियन का जी–20 में सदस्यता हासिल करना सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के भारतीय आदर्श के बिल्कुल मुताबिक है। इस तरह यह महाद्वीप दूसरे महाद्वीपों के और करीब आ जाऐगा जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की मान्यता को और अधिक बल प्राप्त होगा। इस समिट की दूसरी बड़ी विजय है नई दिल्ली घोषणा पत्र का सर्व सहमति द्वारा पारित होना। यह ना सिर्फ भारत की कूट नीति सफलता थी यह भारत की एक ऐतिहासिक जीत भी थी। भारत की एक और सफलता है 6 हज़ार किलोमीटर लंबे इंडिया–मिडिल ईस्ट–यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर की घोषणा। यह कॉरिडोर जहां भारत को यूरोप से मिलायेगा वहीं यह दिलों को भी जोड़ने का काम करेगा। साथ ही आर्थिक उन्नति के एक नए सूर्य का भी प्राकट्य होगा।

एक और भारत का कारनामा था ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस का लॉन्च होना। इसका उद्देश्य है फोसिल ईंधन पर निर्भरता कम करके टिकाऊ जैव ईंधन को बढ़ावा देना। इसके अलावा और भी कई सारे फैसले किये गये जिनका संबंध मानवता के कल्याण के साथ है।

भारत शांति और अहिंसा का पुजारी रहा है। किसी भी प्रकार के युद्ध से तबाही के सिवा और कुछ नहीं मिलता। दिल्ली घोषणा–पत्र में कहा गया कि "संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप सभी देशों को किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता/संप्रभुता व राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ क्षेत्रीय अधिग्रहण की धमकी या बल प्रयोग से बचना चाहिए।" जहां राजघाट में शांति के पयामबर महात्मा गांधी के अहिंसा के संकल्प को और भी दृढ़ करने का विश्व के नेताओं ने निश्चय किया वहीं प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के समिट में किए गए 'मानवता के कल्याण' के आवाह्न की गूंज दूर–दूर तक सुनी गई।

इस शिखर सम्मेलन और इसमें शामिल हुए विश्व के दिग्गज नेताओं द्वारा भारत को लेकर व्यक्त की गई बेहद प्रसन्नता ने यह सिद्ध कर दिया कि विश्व को जोड़ने और इससे अमन का गहवारा बनाने के लिए जो भी प्रयास किए जाएंगे वे तब तक रंग नहीं ला सकेंगे जब तक कि भारत का साथ नहीं होगा। तुर्की की ही अगर बात करें, जो कल तक भारत विशेषकर कश्मीर के बारे में उतना सकारात्मक नहीं था। आज उसी तुर्की के राष्ट्रपति Recep Tayyip Erdogan भारत में जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान कहते हैं कि "यह हमारे लिए गर्व की बात होगी अगर भारत को UN Security Council की स्थायी सदस्तया दी जाती है" भारत की अध्यक्षता में जी–20 शिखर सम्मेलन राष्ट्रों के समुदाय में हमेशा इसलिये याद रखा जायेगा कि इस में 55 मेम्बर स्टेटस पर मुशतमिल अफ्रीकन यूनियन को सदस्या मिली। जिसका श्रेय भारत को जाता है जो इन अफ्रीकी महाद्वीप देशों के लिए एक नई उम्मीद लेकर आया और साथ ही यह भी याद रखा जाएगा कि विश्व को एक पुरअमन धरती बनाने के लिये जोड़ने का श्रीगणेश भी भारत से ही हुआ जब भारत मिडिल ईस्ट यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर लॉंच किया गया। जो विश्व के लिए समृद्धि का एक नया रास्ता खोलेगा।

****

राजश्री
क्षे.स.ई. धारवाड़

दोस्तों के नाम एक सलाम

दोस्त हैं कई जो यदों में बसे
किसी मोड पर मिले, कुछ दूर के साथी,
जितने भी दिन संग गुज़ारें
अपनी छबी को जरूर छोंड चलें

वो बचपन कि शरारत, वो मज़ाक और गुस्सा,
बेफिक्री का अंदाज़, खुलकर था जीना
वो पल भर की हंसी और रोना, लड़ना फिर मिलना,
मासूमियत की झल्कि, भुलाये ना भूलें है कैद जो लम्हे

जवानी का आलम, यारों की महफिल,
ना दिल पे काबू, ना वक्त के पाबंद,
मदहोशी की घडियां, छोंड़ छाड़ और मस्ती,
खुशियों से भरा, हर दिन था नया

जब गृहस्थी को थामे, लगी कमाई की जुगाड़,
परिवार और रिश्ते निभाने का ज़िम्मा,
हो दोस्त से मुलाकात फिर नशा सा छाता
दिल कि गिरह थी खुलती, खुशी की लहर है उठती

जैसे उम्र है घटती
यार दोस्तों की है कमी सी लगती
नजरों के पास या दिल के करीब,
दोस्त तो होते अनमोल संभालकर रखना

जैसे फूलों के अलग रंग, और अपनी ही खुशबू
पर मिलकर महकाये बगीया को,
सूरज और दीपक है अपनी जगह जचते
दोस्त हैं बहुत, हर कोइ अलग और अनोखा

दोस्तों से लगाव बनाये रखना,
मिलने की उम्मीद सदा ही रहे
जहां तक हो साथ चलते ही रहना,
मुस्कुराते हो हर दिन बिताना.''''

****

जी–20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत भाषण की मुख्य बातें

नौ और दस सितंबर 2023 को सम्पन्न जी–20 शिखर सम्मेलन में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में दुनिया के दिग्गज नेता एकत्रित हुए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत भाषण के साथ जी–20 शिखर सम्मेलन की शुरुआत हुई। पीएम मोदी ने जी–20 शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए देश का नाम लेते समय 'भारत' शब्द का प्रयोग किया । प्रधानमंत्री मोदी ने जी–20 शिखर सम्मेलन के आयोजन स्थल भारत मंडपम (Bharat Mandapam) में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक सहित दुनिया के कई देशों के नेताओं का स्वागत किया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की प्रबंध निदेशक और अध्यक्ष क्रिस्टालिना जॉर्जिवा और विश्व व्यापार संगठन (WTO) के महानिदेशक नगोजी ओकोन्जो–इवेला प्रगति मैदान में जी–20 शिखर सम्मेलन स्थल पर पहुंचने वाले पहले लोगों में से थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने जी–20 शिखर सम्मेलन की शुरुआत मोरक्को में आए भूकंप में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना और एकजुटता जताते हुए और वैश्विक भरोसे की कमी को खत्म करने और माहौल को अधिक भरोसेमंद संबंधों में बदलने' की प्रतिज्ञा के साथ की। उन्होंने कहा कि दुख की इस घड़ी में पूरी दुनिया मोरक्को के साथ है, हम हर संभव मदद करने को तैयार हैं। जी–20 शिखर सम्मेलन के स्वागत भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोविड–19 महामारी के बाद दुनिया विश्वास की कमी से जूझ रही है तथा युद्ध ने इसे और गहरा कर दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि हम ऐसे दौर में जी रहे हैं, जब सदियों पुरानी समस्याएं जवाब मांग रही हैं, हमें मानव–केंद्रित दृष्टिकोण के साथ अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री मोदी ने दो दिवसीय जी–20 शिखर सम्मेलन के पहले दिन कहा कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' की अवधारणा दुनिया का मार्गदर्शन कर सकती है। पीएम मोदी ने कहा कि अगर हम कोविड–19 को हरा सकते हैं, तो हम युद्ध के कारण पैदा हुई विश्वास की कमी को भी दूर कर सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह भारत में लोगों का जी–20 बन गया है, 60 से अधिक शहरों में 200 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत जी–20 के अध्यक्ष के रूप में पूरी दुनिया से विश्वास की कमी को एक–दूसरे पर भरोसे में तब्दील करने की अपील करता है ।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अब समय आ गया है कि वैश्विक भलाई के लिए हम सब साथ मिलकर चलें। उन्होंने कहा कि भारत की जी–20 न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में समावेशन का प्रतीक है। हमें बेहतर भविष्य बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी का ये समय पूरी दुनिया को नई दिशा दिखाने वाला और नई दिशा देने वाला एक महत्त्वपूर्ण समय है। ये वो समय है जब वर्षों पुरानी चुनौतियां हमसे नए समाधान मांग रही हैं. इसलिए हमें मानव केंद्रित नजरिये के साथ अपने हर दायित्व को निभाते हुए ही आगे बढ़ना है।

पीएम मोदी ने कहा कि भारत अफ्रीकी संघ को जी–20 का स्थायी सदस्य बनाने का प्रस्ताव रखता है, मुझे विश्वास है कि सभी सदस्य इस प्रस्ताव से सहमत होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने शिखर सम्मेलन में विश्व नेताओं की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा कि मैं आप सभी के समर्थन से अफ्रीकी संघ को जी–20 में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूं।

–साभार गूगल

****

ये रंग बदलता ज़माना आया है

पूनम
हिंदी समाचार कक्ष

ख्वाबों का ज़माना चला गया,
अब तो हकीकत से पाला पड़ा है।
उड़ गया है नीला आसमान,
रह गई है धरती बेजार,
चिड़ियों का चहचना या कोयल की कुक,
अब नहीं सुनाई देती।
बच्चों की खिलखिलाहट में,
खामोशी ने अपना डेरा जमाया है।
इन्द्रधनुष से गायब होते रंग,
अब लोगों के बदलते चेहरे में दिखाई देते हैं।
माटी की सोनी सुगंध में,
मिल गया गंदा साया है,
ये रंग बदलता जमाना आया है,
ख्वाबों ने अपना हाथ,
बेचैनी को थमाया है,
चिंता अपना दोस्त डर को साथ लाया है,
ये रंग बदलता जमाना आया है।

****

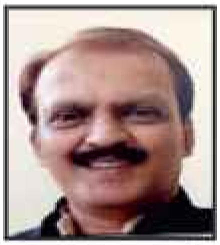

संजीव शर्मा
भोपाल

जी–20 प्रतिनिधियों को खूब रास आया 'देश का दिल'

दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक, सैन्य और भौगोलिक शक्तियों के सबसे बड़े मंच जी–20 देशों के प्रतिनिधियों को 'देश का दिल' खूब रास आया। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भौगोलिक रूप से देश के बीचों–बीच होने के कारण मध्यप्रदेश को 'देश का दिल' कहा जाता है। मध्यप्रदेश को प्रकृति ने भरपूर नेमत से नवाजा है। मध्य प्रदेश में गौरवशाली इतिहास और आधुनिकता का समन्वय है। विंध्य और सतपुड़ा पहाड़ियों से आच्छादित इस प्रदेश के वन्य प्राणी अभ्यारण्य और हिल स्टेशन सैलानियों को अलग एहसास कराते हैं। प्रदेश में बांधवगढ़, पन्ना, पेंच राष्ट्रीय उद्यानों के साथ ही उत्कृष्ट वास्तुकला और गाथाओं की कहानी कहते दुर्ग, महल और स्तूप से भरपूर ग्वालियर, खजुराहो और मांडू जैसे आकर्षण के केंद्र हैं।

मध्यप्रदेश के आदिवासी समाज का सादा जीवन, अलौकिकता से परिपूर्ण संस्कृति और यहां का लगभग एक तिहाई वनों से भरा हुआ क्षेत्र प्रदेश को नया आयाम देते हैं। राज्य के मालवा, निमाड़, बघेलखंड, बुंदेलखंड अंचलों की स्थापत्य कला, हथकरघे की वस्तुएं और अनुपम वन्य जीवन पर्यटकों को रोमांचकारी अनुभव प्रदान करते हैं। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की अध्यक्षता में जी–20 से सम्बंधित कई अहम बैठकों के लिए मध्य प्रदेश में भोपाल, इंदौर, अमरकंटक और खजुराहो जैसे स्थानों का चयन किया।

मध्यप्रदेश में जी–20 की पहली बैठक भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में 16 और 17 जनवरी को हुई। जी–20 के तहत 'थिंक–20' की इस दो दिवसीय बैठक का शुभारम्भ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया जबकि समापन सत्र में राज्यपाल मंगुभाई पटेल शामिल हुए। दो दिन की बैठक में कुल 5 प्लेनरी और 10 पेरेलल सेशन हुए। इसमें जी–20 के सदस्य देशों से करीब 70 मंत्री और अतिथि समेत भारत के अन्य राज्यों से 100 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए। गंभीर चर्चाओं के बीच प्रतिनिधियों ने भोपाल के जनजातीय संग्रहालय, साँची, भीम बैठका, बड़ा तालाब सहित विभिन्न पर्यटन और ऐतिहासिक स्थानों को देखने का मौका भी मिला। भोपाल में ही जी–20 के तहत साइंस–20 का दो दिवसीय सम्मेलन 16 और 17 जून को हुआ। सम्मेलन की थीम कनेक्टिंग साइंस टू सोसायटी एंड कल्चर थी। भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रोफेसर आशुतोष शर्मा ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। इसके अलावा, भोपाल ने सिविल–20 इंगेजमेंट ग्रुप की बैठक की मेजबानी भी की। 1 और 2 जुलाई को हुई इस बैठक में विविध सेवाओं में बदलाव और तकनीकी के इस्तेमाल सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई।

मध्यप्रदेश की व्यवसायिक राजधानी इंदौर में भी कई महत्वपूर्ण बैठकों का आयोजन हुआ। इंदौर में सबसे पहले 13–15 फरवरी को कृषि कार्य समूह की पहली बैठक हुई। बैठक में जी–20 सदस्य देशों, अतिथि देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लगभग सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय बैठक का उद्घाटन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया। इस आयोजन के साथ मध्यप्रदेश के पारंपरिक उत्पादों पर एक प्रदर्शनी भी लगायी गयी। बाजरा और इसके मूल्यवर्धित

खाद्य उत्पादों के साथ–साथ पशुपालन और मत्स्य पालन के स्टॉल भी इस प्रदर्शनी का एक प्रमुख आकर्षण थे।

कृषि कार्य समूह की इस प्रथम बैठक के दौरान कृषि संबंधी मामलों, खाद्य सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे विभिन्न विषयों पर विचार–विमर्श हुआ । केंद्रीय नागरिक उड्डयन और इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी इस बैठक को संबोधित किया । तीसरा दिन इस बैठक की प्रमुख उपलब्धियों पर विचार–विमर्श के लिए समर्पित रहा। वहीं, तकनीकी सत्र में सभी संबंधित सदस्यों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की गहन चर्चा और भागीदारी ने इस बैठक के उद्देश्यों को हासिल करने में मदद की। आयोजन के दौरान, प्रतिनिधियों को राजवाड़ा पैलेस की हेरिटेज वॉक और मांडू किले के भ्रमण के माध्यम से समृद्ध भारतीय इतिहास का अनुभव कराया गया। वहीं मालवा की संस्कृति पर केन्द्रित गीत–संगीत ने विदेशी मेहमानों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के बाद मेहमानों को उपहार के तौर पर मोटे अनाज से बने उत्पाद दिए गए।

इंदौर को एक बार फिर जी–20 सम्मेलन के आयोजन का अवसर मिला। इस बार इंदौर ने 19 से 20 जुलाई तक रोजगार कार्य समूह की चौथी और अंतिम बैठक की मेजबानी की जबकि 21 जुलाई को श्रम एवं रोजगार मंत्रियों की बैठक का आयोजन भी मालवा की संस्कृति की सौंधी सुगंध के बीच इंदौर में ही हुआ । बैठक में जी–20 सदस्य देशों, अतिथि देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लगभग सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मंत्री स्तरीय बैठक में जी–20 और आमंत्रित देशों के 24 मंत्रियों के साथ कुल 165 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की सचिव श्रीमती आरती आहूजा ने बताया कि पहले श्रम व रोजगार मंत्रालय के अधिकारियों ने अन्य सदस्य देशों के प्रतिनिधियों के साथ मंत्री समूह के लिए पेश किए जाने वाले मसौदे पर चर्चा की। इसके बाद, केंद्रीय श्रम और रोज़गार मंत्री भूपेन्द्र यादव ने अन्य देशों के मंत्रियों के साथ इस बैठक के मसौदे को अंतिम रूप दिया। इस आयोजन को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो संदेश के जरिए संबोधित किया। तीन दिवसीय आयोजन के दौरान मध्यप्रदेश की लोक कलाओं का प्रदर्शन भी हुआ। मेहमानों को मध्यप्रदेश के पारंपरिक नृत्यों और निमाड़ और मालवा की संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी मिला । उन्होंने इंदौर की लोकप्रिय 56 दुकान पर मालवा का जायका भी लिया।

अपने विशिष्ट शैली के मंदिरों के लिए दुनिया भर में मशहूर पर्यटन स्थल खजुराहो में 22 से 25 फरवरी को संस्कृति कार्य समूह की पहली बैठक हुई। बैठक में 125 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए। केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री जी.के. रेड्डी; मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार और संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने भी इस बैठक के अलग अलग सत्रों में हिस्सा लिया।

खजुराहो में संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव लिली पांडे ने बताया कि खजुराहो हवाई अड्डे पर प्रतिनिधियों का स्वागत लोक प्रस्तुतियों – बधाई और राई – के साथ किया गया। प्रतिनिधियों को पारंपरिक कला और सांस्कृतिक अनुभव के साथ – साथ ब्लॉक प्रिंटिंग और मेंहदी कला सहित अनेक गतिविधियों में भाग लेने का मौका मिला। मेहमानों ने ऐतिहासिक मंदिरों की पृष्ठभूमि में खूबसूरत प्रकाश व्यवस्था के बीच सुप्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय खजुराहो नृत्य महोत्सव की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनंद लिया । उन्हें पन्ना टाइगर रिजर्व भी ले जाया गया।

खजुराहो ने ही जी–20 इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्यकारी समूह की चौथी बैठक की मेजबानी भी की। केंद्रीय वित्त मंत्रालय के आतिथ्य और अध्यक्षता और ऑस्ट्रेलिया और ब्राजील की सह–अध्यक्षता में इस बैठक में 50 से ज्यादा

प्रतिनिधियों ने परिसंपत्ति श्रेणी के रूप में बुनियादी संरचना के विकास सहित इस क्षेत्र में निवेश, गुणवत्तापूर्ण नगरीय आधारभूत संरचना को प्रोत्साहित करने, इन्फ्राटेक और लचीली, सतत तथा समावेशी नगरीय बुनियादी संरचनाओं में निवेश के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने की दिशा में नवोन्मेषी उपकरणों की पहचान करने जैसे विभिन्न पहलुओं पर विचार–विमर्श किया।

बैठक के दौरान शिष्टमंडलों को खजुराहो के स्वादिष्ट व्यंजन का स्वाद लेने के साथ ही उसके समृद्ध इतिहास और संस्कृति को जानने का अवसर मिला। उन्होंने यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल खजुराहो के प्रसिद्ध पश्चिमी समूह के मंदिरों का भ्रमण किया। शिष्टमंडल के सदस्य चंदेलकालीन मंदिरों के भ्रमण के दौरान मंदिरों की अद्‌भुत शिल्पकला और इतिहास से रूबरू हुए। इस दौरान वे मंदिर के अप्रतिम कला सौंदर्य को देखकर अभिभूत हुए और सराहना की। सदस्यों ने मंदिर परिसर में सेल्फी ली। सदस्यों के समक्ष स्थानीय कलाकारों के दल ने बुंदेली राई और दिवारी नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियां दीं जिसको देखकर वे अभिभूत हुए। शिष्टमंडल के सदस्यों ने आदिवर्त संग्रहालय का अवलोकन के साथ ही रानेह जलप्रपात का भ्रमण किया। उन्होंने बैठक के आरंभ में योग सत्र में भी भागीदारी की।

मध्यप्रदेश के एक अन्य सुरम्य स्थल और मां नर्मदा के उद्‌गम स्थल अमरकंटक में एक जून को यूथ–20 बैठक हुई। वाय–20 परामर्श एक ऐसा मंच है जो युवाओं को नेटवर्क बनाने, विचारों और अनुभवों का आदान–प्रदान करने और तत्काल वैश्विक मुद्दों के रचनात्मक उत्तरों पर चर्चा करने के लिए एकजुट करता है। इस बैठक के जरिये रोजगार, स्टार्ट अप्स, युवाओं के भविष्य, खेल और उद्योग जैसे विभिन्न विषयों पर मंथन हुआ. जलवायु परिवर्तन और आपदा जोखिम न्यूनीकरण स्थिरता को जीवन का तरीका बनाना विषय पर हुई इस दो दिवसीय बैठक को संबोधित करते हुए केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री अश्विनी चौबे ने कहा कि भारत एक युवा देश के रूप में उभर रहा है तो युवाओं को भी भविष्य की सोच में शामिल होना चाहिए, इसलिए Y–20 परामर्श का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रकृति की रक्षा के बारे में सोचने के लिए अमरकंटक से बेहतर कोई जगह नहीं हो सकती क्योंकि यहां प्रकृति और संस्कृति का मिलन होता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो मध्यप्रदेश ने भारत की अध्यक्षता में पहली बार जनभागीदारी पर आधारित जी–20 सम्मेलन के आयोजन में बढ़–चढ़ कर भूमिका निभाई। देशभर के 60 शहरों में हुई करीब 200 बैठकों की तरह मध्यप्रदेश आये विदेशी मेहमान देश के दिल से मेहमान नवाजी, कला–संस्कृति, पर्यटन स्थलों और खान–पान से काफी प्रभावित हुए। खासतौर पर मोटे अनाज (मिलेट्स) से बने लज़ीज़ व्यंजनों ने विदेशी प्रतिनिधियों को भारत के विशिष्ट स्वाद और अंदाज़ से रूबरू कराया।

****

सारे देश की आशा है
हिंदी अपनी भाषा है
जात–पात के बंधन को तोड़े
हिंदी सारे देश को जोड़े।

महानिदेशक (समाचार) श्रीमती मौसुमी चक्रवर्ती
विशिष्ट अतिथियों के साथ

reaming on - Akashvani Delhi YouTube Channel

REST ROOM

G–20 के जरिए सुनहरे भविष्य का संधान

डॉ. कुमार कौस्तुभ
हिंदी समाचार कक्ष

अलग–अलग क्षेत्रों में संघर्ष और तनाव से जूझ रहे विश्व में शांति और स्थिरता स्थापित करके सुनहरे भविष्य की ओर कैसे बढ़ा जा सकता है, इसके लिए महत्वपूर्ण संदेश भारत में हुए जी–20 शिखर सम्मेलन में दिया गया। सितंबर 2023 में नई दिल्ली में हुए जी–20 शिखर सम्मेलन के समापन के बाद 22 नवंबर 2023 को इससे जुड़े वर्चुअल शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक बार पुनः दोहराया कि क्षेत्रीय शांति और स्थिरता की बहाली आवश्यक है और कूटनीति और बातचीत ही भू–राजनीतिक तनावों को दूर करने का एकमात्र रास्ता है। वर्चुअल बैठक के प्रारंभिक वक्तव्य में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि जी–20 शिखर सम्मेलन के दिल्ली घोषणापत्र में जो साझा प्रतिबद्धताएं जताई गई थीं, उनको आगे बढ़ाने के लिए पुनः संकल्प लिया गया गया है। उन्होंने याद दिलाया कि आतंकवाद और हिंसा की कठोर निंदा पर जी–20 देशों में पूर्ण सहमति है। प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि जी–20 के देश वसुधैव कुटुंबकम की भावना से, एकजुट होकर वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेंगे और ग्लोबल साउथ यानी विकास की दृष्टि से पिछड़े देशों की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए काम करते रहेंगे।

इससे पहले, जी–20 की वर्चुअल बैठक के प्रारंभिक वक्तव्य में प्रधानमंत्री ने विश्व के देशों के बीच आपसी विश्वास बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा था कि अविश्वास और चुनौतियों से भरी आज की दुनिया में, ये आपसी विश्वास ही है जो हमें बांधता है, एक दूसरे से जोड़ता है। दरअसल, 'वसुधैव कुटुंबकम' के ध्येय को लेकर भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में 9–10 सितंबर 2023 को हुए जी–20 शिखर सम्मेलन हुए इस सम्मेलन का मूल मंत्र 'एक पृथ्वी, एक कुटुंब, एक भविष्य' था। प्रधानमंत्री ने इसकी पुष्टि की, कि सभी सदस्य देशों ने "One Earth, One Family, One Future, में विश्वास जताया है और, विवादों से हटकर एकता और सहयोग का परिचय दिया है। इसी का यह परिणाम है कि जी–20 के नेताओं की आम सहमति से दिल्ली घोषणापत्र को जारी किया गया। ज्ञातव्य हो कि इससे पहले जी–20 की बैठकों में इसके घोषणापत्र पर शत–प्रतिशत आम सहमति नहीं हो पा रही थी। लेकिन, भारत में हुए शिखर सम्मेलन से पहले और इस दरम्यान 200 घंटों तक चली लंबी बातचीत और विचार–विनिमय के बाद भारत तमाम देशों के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम राय बनाने में सफल रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि 83 पैराग्राफ वाला दिल्ली घोषणापत्र बिना किसी असहमति के जस का तस स्वीकार कर लिया गया। यह घोषणापत्र मूलत जिन बातों पर केंद्रित है, उनमें शामिल हैं–

- मजबूत, सतत, संतुलित और समावेशी विकास में तेजी।
- सतत विकास के लिए 2030 के एजेंडा के पूर्ण और प्रभावकारी कार्यान्वयन में तेजी लाने का प्रयास।
- एकीकृत और समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हुए 'कम जीएचजी/कम कार्बन उत्सर्जन।
- जलवायु – अनुकूल और पर्यावरणीय

रूप से सतत विकास वाले पथ पर अग्रसर होना।

- दीर्घकालिक भविष्य के लिए हरित विकास समझौता।
- भविष्य में स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थितियों के लिए बेहतर तैयारी करने के लिए विकासशील देशों में चिकित्सा संबंधी उपायों तक लोगों की पहुंच बढ़ाएंगे।
- विकासशील देशों को कर्ज के जाल में फंसने से बचाने के लिए तत्काल और प्रभावकारी रूप से तेज विकास।
- सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की दिशा में प्रगति में तेजी लाने के लिए सभी स्रोतों से वित्तपोषण बढ़ाएंगे।
- तापमान लक्ष्य सहित पेरिस समझौते को प्राप्त करने की दिशा में प्रयासों में तेजी।
- सतत और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल सेवाओं और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना तक पहुंच बढ़ाएंगे।
- टिकाऊ, गुणवत्तापूर्ण, स्वस्थ, सुरक्षित और लाभकारी रोजगारों को बढ़ावा।
- लैंगिक असमानता दूर करेंगे, अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा।
- बहुपक्षवाद को पुर्नजीवित करना।

इस तरह, जी–20 शिखर सम्मेलन में विश्व मजबूत, सतत, समावेशी और संतुलित विकास की ओर अग्रसर होता दिखा। इसे कार्यान्वित करने की दिशा में सबसे बड़ी पहल सर्वसम्मति से जी–20 में अफ्रीकी संघ को शामिल किया जाना है। प्रधानमंत्री ने वर्चुअल शिखर सम्मेलन में इस बात का उल्लेख करते हुए कहा कि अफ्रीकी संघ को शामिल करने के साथ ही जी–20 ने पूरे विश्व को समावेशिता का जो ये संदेश दिया है, वो अभूतपूर्व है।

भले ही इजरायल और हमास या रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष थमा नहीं या फिर दक्षिण चीन सागर और लाल सागर में तनाव की स्थितियां बढ़ती दिख रही हों, लेकिन जी–20 की सफल बैठक से यह अवश्य स्पष्ट हो गया कि इन मामलों को सुलझाने में संयुक्त राष्ट्र की नगण्य भूमिका के बावजूद दुनिया में शांति और सद्भावना का माहौल बनाने के लिए कहीं न कहीं उम्मीद की किरण जरूर दिखती है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि "पिछले महीनों में नयी चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। पश्चिम एशिया क्षेत्र में असुरक्षा और अस्थिरता की स्थिति हम सब के लिए चिन्ता का विषय है। आज हमारा एक साथ आना, इस बात का प्रतीक है कि हम सभी मुद्दों के प्रति संवेदनशील हैं और इनके समाधान के लिए एक साथ खड़े हैं। ...आज संकटों के जो बादल हम देख रहे हैं, One Family में वह ताकत है कि हम शांति के लिए काम कर सकते हैं। मानवीय कल्याण के दृष्टिकोण से, हम आतंक और हिंसा के विरुद्ध, और मानवता के प्रति अपनी आवाज बुलंद कर सकते हैं। आज विश्व की, मानवता की इस अपेक्षा की पूर्ति के लिए भारत कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तत्पर है"।

भारत की अध्यक्षता में जी–20 शिखर सम्मेलन इस मायने में भी मील का पत्थर साबित हुआ कि इस दौरान बहुपक्षवाद पर पुनः विश्वास व्यक्त किया गया और मानव–केन्द्रित दृष्टिकोण को अपनाने पर जोर दिया गया। इसका उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने मिलकर बहुपक्षीय विकास बैंकों और वैश्विक प्रशासनिक सुधारों को दिशा दी है। और इनके साथ ही, भारत की प्रेसिडेंसी में जी–20 को Peoples–20 की पहचान मिली है।

'सबका साथ, सबका विकास, और सबका विश्वास' के ध्येय को लेकर चलते हुए विगत 10 वर्षों में भारत ने जिस तरह से तमाम क्षेत्रों में तरक्की की बुलंदियां हासिल की हैं, वह विश्व के लिए भी आदर्श बन सकता है। प्रधानमंत्री ने जी–20 देशों को संबोधन में इस बात पर जोर

दिया था कि 21वीं सदी के विश्व को आगे बढ़ते हुए ग्लोबल साउथ यानी विकास के मामले में पिछड़े देशों की चिन्ताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने स्पष्ट किया था कि समय की मांग है कि विकास के एजेंडे को पूर्ण समर्थन दिया जाए और वैश्विक स्तर पर आर्थिक और प्रशासनिक सुधार किए जाएं ताकि जरूरतमंद देशों को समय से और आसान तरीके से सहायता मिल सके। इससे 2030 तक दीर्घकालिक विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलेगी।

इसमें कोई शक नहीं है कि आम लोगों के जीवन में बदलाव की दृष्टि से भारत आज दुनिया के तमाम देशों के सामने उदाहरण के रूप में खड़ा है। भारत महिलाओं के नेतृत्व में विकास की दिशा में अग्रसर है। महिलाओं के लिए संसद और विधानसभाओं में आरक्षण का ऐतिहासिक निर्णय इसका ज्वलंत उदाहरण है। वहीं, भारत ने जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए ग्रीन क्रेडिट, ग्लोबल बायोफ्यूल एलाएंस की पहल की है, मिशन Life, यानि lifestyle for environment, को मान्यता दी है। 2030 तक रिन्यूएबल एनर्जी को तीन गुना तक ले जाने का आह्वान किया है। Clean Hydrogen के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई है। तो साथ ही साथ मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे के निर्माण में भी सफलता हासिल की है, और आनेवाले समय में कृत्रिम मेधा के जिम्मेदारी से उपयोग पर जोर दे रहा है। जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान इन सभी विषयों का उल्लेख करते हुए विश्व को असमानता दूर करते हुए विकास के लिए सुनहरे भविष्य का संधान करने की दिशा में बढ़ने की राह दिखाई गई।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जी–20 शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन से अंततराष्ट्रीय फलक पर भारत का कद काफी बढ़ा है। वैसे तो भारत में पहले भी बड़े अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित होते रहे हैं। खासतौर से 1983 में हुए गुट–निरपेक्ष देशों के सातवें शिखर सम्मेलन का उल्लेख इस कड़ी में अवश्य होता है जिसमें 100 से ज्यादा देशों के राष्ट्राध्यक्ष या प्रतिनिधि शामिल हुए थे, लेकिन इसके 40 साल बाद 2023 में नई दिल्ली में आयोजित जी–20 शिखर सम्मेलन यह पहला अवसर बना जब चीन और रूस के राष्ट्रपतियों को छोड़कर विश्व के तमाम बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष भारत के मेहमान बने। राजधानी दिल्ली में बड़े ही शांतिपूर्ण और सुचारू रूप से इस सम्मेलन का आयोजन हुआ, जो न केवल यहां की प्रशासनिक और पुलिस व्यवस्था बल्कि आम नागरिकों के लिए भी गर्व का विषय है। इस पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत के करोड़ों सामान्य नागरिक जी–20 से जुड़े, हमने इसे एक पर्व की तरह मनाया।

****

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो,
तो सूरज की तरह जलना सीखो।

—डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम

भारत का जी–20 मोमेंट : वैश्विक मंच पर दिखाया अपना उभार!

किसी राष्ट्र की यात्रा में ऐसे पल आते हैं, जब वैश्विक मंच पर उसका उभार कुछ इस तरह से होता है कि उसमें शक की कहीं कोई गुंजाइश नहीं होती। भारत की G–20 की अध्यक्षता ऐसा ही ऐतिहासिक पल लेकर आई है। भारत G–20 शिखर बैठक में संयुक्त वक्तव्य पर आम सहमति हासिल कर पाएगा या नहीं, इस सवाल को लेकर उदासी के सारे बादल तब अचानक छंट गए, जब बैठक समाप्त होने के काफी पहले ही सहमति का दस्तावेज सार्वजनिक कर दिया गया। भारत का औसत प्रदर्शन देखने के हम इस कदर आदी हो चुके हैं कि जब देश ने अपेक्षाओं की सारी हदें तोड़ते हुए अच्छा प्रदर्शन किया तो उस खबर को जज्ब करने में भी हमें थोड़ा वक्त लगा। यहां बात सिर्फ नई दिल्ली घोषणा पर बनी सहमति की नहीं, उस पूरे एटीट्यूड की है, जिससे G–20 की यह पूरी प्रक्रिया संचालित की गई।

दो समानांतर संवाद

शिखर बैठक में भारत ने अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षा और मेगा डिप्लोमेसी की क्षमता को फिर से साबित किया। G–20 की इस प्रक्रिया के दौरान समानांतर रूप से दो संवाद साथ–साथ चल रहे थे।

- एक तरफ देश के अंदर आम हिंदुस्तानी घरेलू और दूसरे देशों के बीच लगातार धुंधली पड़ती रेखा को देख रहा था और इस तरह देश के बाहरी प्रभाव को बेहतर ढंग से महसूस कर पा रहा था।
- दूसरा संवाद बाकी पूरी दुनिया से था, जो अतीत में अक्सर वैश्विक मंचों पर नेतृत्व करने की भारत की इच्छा और क्षमता पर सवाल उठाती रही थी।
- सच पूछिए तो पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के वैश्विक व्यवहार में महत्वाकांक्षा की नई भावना भर दी है। उनकी द्विपक्षीय कूटनीति तो जगजाहिर रही ही है, G–20 ने उन्हें और भारत को सीधे एक बड़े और व्यापक मंच पर ला दिया। इसमें नई दिल्ली को बड़ी ताकतों के आपसी संघर्ष से उपजे मौजूदा अंतरराष्ट्रीय माहौल से भी मदद मिली।
- तेजी से उभरते वैश्विक शक्ति संतुलन के दबाव के कारण मौजूदा बहुपक्षीय संस्थानों की कमजोरियां पूरी तरह उजागर हो चुकी हैं।
- यूक्रेन युद्ध के चलते वैश्विक विकास का वह अजेंडा खतरे में पड़ गया, जिसके लिए महामारी के बाद के समय में दुनिया का एक बड़ा हिस्सा बेकरार था।
- ऐसे में चीन और पश्चिम की बढ़ती आक्रामकता न केवल पूरी दुनिया में निराशा फैला रही थी, बल्कि नेतृत्व का एक शून्य भी पैदा कर रही थी।

भारत इस शून्य को भरने के लिए तेजी से आगे बढ़ा। अपने नेतृत्व का सिक्का जमाने के लिए उसने G–20 की अपनी अध्यक्षता का बेहतरीन इस्तेमाल किया। इस बात से खास मतलब नहीं था कि G–20 का मंच अतीत में खास प्रभावी नहीं रहा है। नई दिल्ली को अपनी भूमिका सही ढंग से निभानी थी और उसने निभाई। भू–राजनीतिक ध्रुवीकरण को अच्छी तरह समझते हुए उसने वैश्विक विकास का एजेंडा ग्लोबल साउथ के नजरिए से बनाया। वैश्विक राजनीति की संरचनात्मक वास्तविकताएं कोई भारत की बनाई हुई नहीं हैं, न ही भारत एकतरफा तौर पर उन्हें बदल सकता है। लेकिन उसे ग्लोबल गवर्नेंस का अपना एजेंडा सामने रखने का कोई रास्ता

तलाशना था। और, यह काम उसने पूरे भरोसे के साथ किया टकराव और विकास के एजेंडे के बीच की कड़ी पर फोकस बढ़ाते हुए, सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDG) हासिल करने में मिल रही नाकामियों को रेखांकित करते हुए, अपने डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPP) को वैश्विक जनकल्याण के साधन के रूप में पेश करते हुए, मल्टीलैटरल डेवलपमेंट बैंक में सुधार की प्रक्रिया को तेज करने पर जोर बढ़ाते हुए, कम और मध्य आय वाले देशों पर कर्ज के बोझ को रेखांकित करते हुए और ग्लोबल साउथ को अपनी ग्लोबल गवर्नेंस इनिशिएटिव के केंद्र में रखते हुए।

अब जब अफ्रीकन यूनियन ने G–20 को G–21 में तब्दील कर दिया है, नई दिल्ली इस वैश्विक मंच को ज्यादा इन्क्लूसिव और ज्यादा प्रासंगिक बनाने की अपनी उपलब्धि पर गर्व भरी नजर डाल सकती है। सौ फीसदी सहमति के साथ नई दिल्ली घोषणा को अपनाया जाना तो बस सोने पे सुहागा का काम कर रहा है।

इस बात को लेकर काफी सस्पेंस बना हुआ था कि यूक्रेन मसले पर बन चुकी खाई को भारत कैसे पाटेगा। लेकिन नई दिल्ली के अब तक के स्टैंड के अनुरूप ही G–20 घोषणा ने सभी देशों से अंतरराष्ट्रीय कानूनों और बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के मुताबिक शांति तथा स्थिरता बनाए रखने और क्षेत्रीय अखंडता तथा संप्रभुता का सम्मान करने की अपील की। इसके साथ ही मतभेदों को पाटने की भारत की क्षमता वैश्विक स्तर पर पूर्ण रूप में प्रदर्शित हो गई।

एक और चीज जो प्रदर्शित हुई वह थी ग्लोबल प्लेटफॉर्म को साझा चुनौतियों का हल देने लायक बनाने की नई दिल्ली की क्षमता. इस मामले में दो बातें खास तौर पर ध्यान देने लायक हैं :–

- जीरो उत्सर्जन के टारगेट की दिशा में अंतरराष्ट्रीय प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस लॉन्च किया जाना इंटरनेशनल सोलर अलायंस के गठन के बाद भारत का दूसरा इंस्टीट्यूशनल कमिटमेंट है।
- ग्लोबल इकॉनमिक ऑर्डर को ज्यादा इन्क्लूसिव बनाने की भावना के तहत भारत, अमेरिका, पश्चिम एशिया और यूरोपीय यूनियन को जोड़ने वाले एक व्यापक रेल और शिपिंग कनेक्टिविटी नेटवर्क की घोषणा की गई।

नतीजा नहीं, प्रक्रिया

आज जब दुनिया की बड़ी शक्तियों के बीच तनाव बढ़ा हुआ है, इस तरह की शिखर बैठक आयोजित करके और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के तरीके पर व्यापक सहमति कायम कर के भारत ने एक बड़ी उपलब्धि अपने नाम की है। लेकिन नतीजे चाहे जितने भी आकर्षक लगते हों, वास्तव में पिछले कुछ महीनों में चली G–20 की प्रक्रिया ही दरअसल वह चीज है जिसने वैश्विक मध्यस्थ के रूप में भारत की संभावनाओं को रेखांकित करने का काम किया है। भारत ने विश्व व्यवस्था में अपनी साख काफी बढ़ा ली है। G–20 और भारतीय विदेश नीति दोनों का दर्जा ऊंचा उठ चुका है। उन्हें अब पहले वाली नजर से शायद ही देखा जा सके।

साभार – गूगल

****

शुभाशीष कुमार चंदा
क्षेत्रीय समाचार इकाई
अगरतला

गोमती–डंबूर–छबिमुरा : त्रिपुरा की मनोरम प्राकृतिक सुंदरता का विलोभनीय संगम

मनमोहक पूर्वोत्तर क्षेत्र के एक कोने में स्थित, त्रिपुरा को कभी दुर्गम, भौगोलिक रूप से अलग और दूरस्थ के रूप में जाना जाता था। हिंसा और उग्रवाद की जगह – इस प्रकार की उपाधियों को भी राज्य के नाम के साथ जोड़ा गया था। पर वे दिन अब नहीं है, और वर्तमान में, यह न केवल इस उत्तर–पूर्व क्षेत्र में सबसे अधिक आबादी वाला दूसरा राज्य है, बल्कि अपने एकमात्र हवाई अड्डे, अगरतला एमबीबी हवाई अड्डे के माध्यम से, पूरे क्षेत्र में लोगों की दूसरी सबसे बड़ी आवाजाही भी यहीं से होती है। राज्य की राजधानी अगरतला, जनसंख्या के लिहाज से, इस क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, और यह देश के बाकी हिस्सों से सड़क, रेल और हवाई मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है, जिससे, भूमि–बंद राज्य होने के कलंक को मिटाने की दौड़ में शामिल हो गया है। पहाड़ी राज्य त्रिपुरा का कुल क्षेत्रफल केवल 10, 492 वर्ग किलोमीटर है। और यह भारत का दूसरा सबसे छोटा राज्य है। यह पूर्वोत्तर क्षेत्र के चरम दक्षिण–पश्चिम कोने में स्थित है, जो पूर्वोत्तर में असम और मिजोरम के साथ एक सामान्य सीमा साझा करता है और उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण–पूर्व में बांग्लादेश से घिरा हुआ है। ये सच है कि बाहर की दुनिया के लोगों के एक बड़े वर्ग के पास, कई वर्षों तक, इस राज्य के बारे में बहुत कम विचार और जानकारी थी । यह भी आज सच है कि यह राज्य आज उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है, जो जीवन के दैनिक संघर्ष से कुछ दिनों के लिए आज़ादी चाहते हैं और एक अनूठी छुट्टी की तलाश में हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि त्रिपुरा का परिदृश्य विविध प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न है, जिसमें हरे–भरी पहाड़ियों, टीलों, मैदानों और नदियों, जंगल, वनस्पतियों और जीवों की बेजोड़ प्राकृतिक संपदा है। विस्मयकारी पहाड़ी शांति का आनंद लेने के अलावा, तीर्थ स्थलों, अभयारण्यों, मूर्तिकला, चित्रकला के साथ ऐतिहासिक स्थलों और हिल स्टेशनों जैसी अनूठी विशेषताओं को आम तौर पर देखा जाता है। साथ ही, राज्य कई मनमोहक विशेषताओं से संपन्न है, जहां सुरम्य ग्रामीण इलाकों की जीवन शैली का अनुभव किया जा सकता है और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं तथा सीमावर्ती हाटों से सटे गाँव, और हरे–भरे पहाड़ी दृश्य का भी । धान के खेतों, प्राकृतिक झीलों और टेढ़ी–मेढ़ी नदियों से युक्त राज्य के ग्रामीण परिदृश्य की हरियाली इतनी अनोखी है कि वे किसी भी इंसान को प्रकृति के राजसी स्वाद से प्रेरित होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

आइए हम गोमती–डंबूर–छबिमुरा पर एक नज़र डालते हैं। यह संगम जैसा एक त्रय, नदियों, पहाड़ियों, जंगलों और एक विशाल झील का मिश्रण – आगंतुकों को प्राचीन प्राकृतिक सुंदरता और खड़ी पहाड़ी श्रृंखला में खुदी हुई चट्टानों की मूर्तियों की पेशकश करता है। यह सुरम्य क्षेत्र गोमती वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर स्थित है, जो राज्य में सबसे बड़ा अभयारण्य है, और राजधानी शहर अगरतला से 115 किमी दूर है। यह धलाई जिले में स्थित है। हालांकि, राज्य के दक्षिणी क्षेत्र से आसानी से यहां पहुंचा जा सकता है। इसमें तीन महत्वपूर्ण स्थल मौजूद हैं – डंबूर झील, डंबूर हाइडल

परियोजना और छबीमुरा। 41 किमी लंबी डंबूर झील, दो सहायक नदियों – राइमा और साइम चौनल काटकर बनाई गई है, जिसमें विभिन्न आकार के 48 से अधिक टापू हैं। ये द्वीप निवासी जल पक्षियों सहित बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों के लिए बसेरा और घोंसला बनाने की जगह प्रदान करते हैं। झील विभिन्न प्रकार की देशी मछलियों से समृद्ध है। झील का स्वरूप एक ताबोर के आकार के छोटे ड्रम की तरह है, भगवान शिव का डंबूर जिससे डंबूर नाम की उत्पत्ति हुई है। आसपास की पहाड़ियाँ और टापू आकर्षक रूप से पन्ना जैसे हरे रंग के हैं और एक मनोरम प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। जिस स्थान से पवित्र नदी गोमती का उद्‌गम होता है, उसे तीर्थमुख कहा जाता है, जो एक तीर्थस्थल है, जिसमें पौष संक्रांति के दौरान स्नान करना हिंदुओं द्वारा सबसे पवित्र माना जाता है। पौराणिक कथाओं से पता चलता है कि तीर्थमुख में पवित्र स्नान करना, जो गोमती नदी का उद्‌गम स्थल है, 600 से अधिक वर्षों से जारी है। इसके अलावा, एक द्वीप में नारियल कुंज स्थित है। स्वदेश दर्शन जैसी भारत सरकार की विभिन्न पर्यटन प्रचार योजनाओं की सहायता से राज्य सरकार ने वहां कई विशेष और सुखदायक सुविधाएं स्थापित की गई हैं। डंबूर झीलों पर नौका विहार के बाद, प्राकृतिक वातावरण के बीच नारियल कुंज में लकड़ी की झोपड़ियों में अवकाश का आनंद लेने के लिए सबसे सुखद स्थानों में से एक है। डंबूर झील पर नौका विहार करते समय, सबसे आकर्षक स्थान छबीमुरा देखा जा सकता है, जिसका शाब्दिक अर्थ हिंदू देवताओं की रॉक कट छवियों के रूप में हो सकता है। घने जंगल, नदी और झील, गुफाएं और पहाड़ी श्रृंखला में खुदी हुई मूर्तियों की समावेश है छबीमुरा पर्यटन स्थल। पत्थर पर किए हुए शिल्पो में भगवान शिव, विष्णु, कार्तिक, महिषासुर–मर्दिनी दुर्गा और अन्य देवी–देवताओं की प्रतिमा भी है। भारतीय पुरातत्व सोसायटी के अनुसार ये चित्र 15वीं से 16वीं शताब्दी के हैं। ऐसा कहा जाता है कि मध्य युग में भारत के दक्षिण और पूर्व क्षेत्र से आने वाले व्यापारी और बौद्ध भिक्षु बर्मा और आगे पूर्व में स्थित देश में जाते वक्त बंगाल की खाड़ी का इस्तमाल करते थे। और यहां से गुजरे वक्त वे बीच में त्रिपुरा के दक्षिण और उत्तर भागियों पर विश्राम करते थे। ऐसा माना जाता है कि धबिमूरा के पर्वतों पर की हुई शिल्पकला में लोगों ने की थी। छविमुरा, जो अगरतला से 85 किमी दूर है, घने जंगलों और दो गुफाओं से आच्छादित है। पर्यटक इन जंगलों के माध्यम से ट्रेकिंग के बाद ही रॉक कट नक्काशी और गुफाओं के मुख्य स्थल तक पहुँच सकते हैं। छबिमुरा के साथ डंबूर पर नौका विहार करते समय बहुत सारे मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रवाह पर्यटक के दिल और दिमाग को मोहित करते हैं – दोनों तरफ पहाड़ियों और जंगल के बीच सर्पीन जलमार्ग और पक्षियों की चहचहाहट के साथ पानी की लहरों की आवाज आंखों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। कभी–कभी झरनों और गुफाओं के पास जंगली जानवरों की आश्चर्यजनक आवाजें सुनाई देती हैं। जंगल के मध्य में विराजमान छविमुरा, प्रकृति का एक असामान्य उपहार है। यह उपहार निश्चित रूप से पुरातात्विक और आध्यात्मिक रूप से प्रतिष्ठित दृष्टिकोण के अलावा, सब के मन को अनंत और दुर्लभ प्राकृतिक आनंद से भर देता हैं।

****

दीपा यादव
हिंदी समाचार कक्ष

स्त्री जिजिविषा

जब जब खुशियां रूठेंगी,
उम्मीद की डोरी छूटेगी
दिल को अपने समझाऊंगी,
मैं परचम सा लहराऊँगी
सपनो को नए मैं पर दूंगी,
हर रात को सुबह कर दूंगी
किस्मत से हार न मानूंगी,
न वक्त के पैर पखारूंगी
गैरों से मुझको आस नहीं,
अपनो पर भी विश्वास नही
किस्मत न हमेशा सोती है,
हर रात की सुबह होती है
हर दीपक जब बुझ जायेगा,
और घोर अंधेरा छायेगा
तब सूर्य किरण मैं बन कर के,
बस हौले से मुस्काऊंगी
और तुझ को ये दिखलाऊंगी,
कि तम में इतना दम नहीं
और दुनिया में इतना गम नहीं,
जितना हम डर जाते हैं
करना बहुत कुछ चाहते है,
पर कुछ भी नहीं कर पाते हैं
रोते–रोते ही जीते है और
जीते जी मर जाते है
मरने की सी हालत में,
मैंने जीने की ठानी है
माना अधरों पर मौन है मेरे,
आंखो में थोड़ा पानी हैं
ये पानी मुझको बल देगा,
एक उजला सुनहरा कल देगा
जिसमे मैं भी मुस्काऊंगी,
न तेरा शोक मनाऊंगी
बस परचम सा लहराऊंगी,
और खुल के जश्न मनाऊंगी
और खुल के जश्न मनाऊंगी,
बस खुल के जश्न मनाऊंगी....

****

हिंदी

जिस भाषा में सपने लेकर निंदिया आती है
जिस भाषा में पीड़ा अपना गीत सुनाती है
जिस भाषा में मैं भी अपना प्यार लुटाती हूँ
जिस भाषा में होकर दुखी मैं रोष जताती हूँ
उस भाषा का प्यार भरा मेरे सर पर साया है
उस भाषा ने मुझको जग में मान दिलाया है
वो भाषा माता बनकर मेरा वर्चस्व बचाती है
हिंदी ही है जो मुझे मेरी पहचान बताती है

****

G-20 समिट में भारत का क्या रोल है और इससे देश को क्या फायदा होगा?

जी–20 समिट इंडिया: 1997 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद जी–20 की शुरुआत की गई थी। इस बैठक में पहले आर्थिक मुद्दों पर चर्चा होती थी, लेकिन बाद में और भी कई मुद्दों को शामिल किया गया।

जी–20 समिट 2023 इन दिल्ली: नवंबर 2022 में बाली शिखर सम्मेलन में पीएम नरेंद्र मोदी को जी–20 की अध्यक्षता के लिए हथोड़ा सौंपा गया था। उस समय पीएम मोदी ने कहा था, कोविड के बाद के दौर में नई व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी हमारे कंधों पर है। मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि जी–20 की भारत की अध्यक्षता समावेशी, महत्वाकांक्षी, निर्णायक और सक्रियता भरी होगी। एकसाथ मिलकर हम जी–20 को वैश्विक परिवर्तन का उत्प्रेरक बनाएंगे। अध्यक्षता सौंपे जाने के बाद से ही भारत तुरंत इसकी तैयारियों में लग गया। 1 दिसंबर 2022 से देशभर में इससे जुड़े कार्यक्रम शुरू किए गए, जो 30 नवंबर 2023 तक जारी रहेंगे। यानी 9 और 10 सितंबर को दिल्ली में होने वाले जी–20 सम्मेलन के बाद भी भारत में इससे जुड़े कार्यक्रम चलते रहेंगे। जी–20 सम्मेलन में भारत की भूमिका बताने से पहले ये बताना जरूरी है कि आखिर जी–20 है क्या और इसकी शुरुआत क्यों हुई?

क्या है जी 20?

जी20 यानी ग्रुप ऑफ ट्वेंटी, ये 20 देशों का एक समूह है। ये 20 देश साल में एक बार एक सम्मेलन के लिए इकट्ठा होते हैं और दुनियाभर के आर्थिक मुद्दों के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, भ्रष्टाचार विरोध और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर चर्चा करते हैं। जो देश इस सम्मेलन की अध्यक्षता करता है, उसका प्रमुख काम किसी विषय विशेष के प्रति सभी देशों के बीच आम सहमति बनाना होता है।

G-20 के सदस्य कौन–कौन से देश हैं?

जी–20 में 19 देश भारत, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किये, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। हर साल अध्यक्ष देश कुछ देशों और संगठनों को मेहमान के तौर पर भी आमंत्रित करता है।

इस बार भारत ने बांग्लादेश, ईजिप्ट, मॉरीशिस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को मेहमान के तौर पर बुलाया है। वहीं नियमित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (यूएन, आईएमएफ, डब्ल्यूबी, डब्ल्यूएचओ, डब्ल्यूटीओ, आईएलओ, एफएसबी और ओईसीडी) और क्षेत्रीय संगठनों (एयू, एयूडीए–एनईपीएडी और आसियान) की पीठों के अलावा जी–20 के अध्यक्ष के रूप में भारत की ओर से आईएसए, सीडीआरआई और एडीबी को अतिथि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के रूप में आमंत्रित किया गया है।

G-20 में शामिल देशों का प्रभाव

जी–20 के सदस्य देश, दुनिया की 60% आबादी की नुमाइंदगी करते हैं। इन देशों का पूरी दुनिया की GDP में 85% और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में 75% हिस्सेदारी है।

G-20 की कब और क्यों हुई थी शुरुआत?

साल 1997 में एशियाई वित्तीय संकट (1997 Asian Financial Crisis) के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में जी–20 की शुरुआत की गई थी। शुरुआत में जी–20 का फोकस सिर्फ व्यापक आर्थिक मुद्दों पर था, लेकिन वक्त के साथ–साथ इसके एजेंडे में व्यापार, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार विरोध शामिल किया गया। साल 2007 में जब पूरी दुनिया आर्थिक मंदी की चपेट में आई तो इस समूह की अहमियत और बढ़ गई। जहां पहले इस समूह में वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर शामिल थे, बाद में इसमें सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को शामिल किया गया। इस तरह से इन देशों ने वाशिंगटन में 2008 में अपनी पहली बैठक की। साल 2009 और 2010 में जी–20 की दो बैठकें हुई। अब तक जी–20 की कुल 17 बैठकें हो चुकी हैं और इस साल 18वीं बैठक की मेजबानी भारत कर रहा है।

भारत में जी–20 शिखर सम्मेलन

भारत 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक जी–20 की अध्यक्षता करेगा। 16 नवंबर 2022 को जी–20 बाली शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी को जी–20 की अध्यक्षता सौंपी गई थी। इससे पहले 8 नवंबर 2022 को पीएम ने जी 20 का लोगो लॉन्च किया था और भारत की जी–20 प्रेसीडेंसी थीम 'वसुधैव कुटुम्बकम' यानी वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर का अनावरण किया था। जी–20 के लोगो को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रंगों में डिजाइन किया गया है, जो हमारे पृथ्वी समर्थक दृष्टिकोण और चुनौतियों के बीच विकास का प्रतीक है। देश के उत्तरी छोर श्रीनगर से लेकर दक्षिण में तिरुवनंतपुरम और पश्चिम में कच्छ के रण से लेकर पूरब में कोहिमा तक में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश इस कार्यक्रम का हिस्सा हैं। इस कार्यक्रम के लिए देशभर में 56 आयोजन स्थल है जहां 200 से ज्यादा बैठकों का आयोजन किया जा रहा है।

जी–20 में भारत की भूमिका क्या है?

जी–20 सम्मेलन में तीन स्तरों पर भारत की जरूरत है।

- पहली वैश्विक जहां भारत को इस विभाजित दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाना है, जिसकी लंबे समय तक छाप छोड़ना भी एक मूलभूत उद्देश्य है। साथ ही विकासशील देशों के सरोकारों को आगे बढ़ाना और उनके मुद्दों को प्राथमिकता से रखना भी भारत की जिम्मेदारी है।
- दूसरी क्षेत्रीय वैश्विक स्तर पर दक्षिण एशिया का अगुआ देश भारत ही है। इस वजह से दक्षिण एशिया के बाकी देशों के हितों को (जो जी–20 का हिस्सा नहीं है) आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी भारत की ही है।
- तीसरी घरेलू आज पूरी दुनिया में भारत के नाम का डंका बज रहा है, सिर्फ भारत को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को भी भारत की जरूरत है। ऐसे में दुनियाभर में भारत की बढ़ती हैसियत की घरेलू माहौल में पुष्टि करना भी एक बड़ी जिम्मेदारी है।

जी–20 में भारत किन मुद्दों पर देगा जोर?

भारत अपनी पूरी ताकत के साथ दुनिया के प्रमुख 20 देशों का नेतृत्व कर रहा है। भारत को मौका मिला है कि वह प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति बनाने, सामूहिक कार्रवाई के लिए जोर डालने की अगुवाई करे और साथ ही विकासशील देशों के एजेंडों का चैमपियन बनकर उभरे। सीधे शब्दों में कहा जाए तो यह वैश्विक मंच भारत के बढ़ते महत्व को दर्शाने की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस सम्मेलन

में चर्चा के दौरान कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जहां भारत की अपनी कोशिशों पर ध्यान फोकस करने की उम्मीद है।

जलवायु संकट होगी चर्चा

भारत से जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर चर्चा का नेतृत्व करने की जो उम्मीद विश्व ने रखी है, भारत उस पर खरा उतर रहा है। इस साल जलवायु परिवर्तन की वजह से भारत के कई राज्य जैसे हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड में भारी तबाही मची है। इसमें जान–माल का काफी नुकसान हुआ है। भारत के अलावा कई और देश भी जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे हैं। COP 27 सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे देशों को मुआवजे के लिए घाटा और नुकसान, फंड की स्थापना करने पर बात बनी थी। भारत जी–20 सम्मेलन में इस फंड के क्रियान्वयन के लिए बात रख सकता है। साफ शब्दों में कहें तो भारत का ध्यान विकासशील देशों को उनके जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए विकसित देशों की आवश्यकता पर केंद्रित करने पर है।

वित्तीय विनियमन और आर्थिक विकास पर चर्चा

भारत दुनिया के लिए एक देश से ज्यादा एक बाजार है, जहां अपनी दुकान लगाने के लिए बाकी देशों में होड़ मची हुई है। इसी का नतीजा है कि भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। भारत ने विकास को बढ़ावा देने के लिए हाल के वर्षों में आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला लागू की है। दुनिया के सभी देशों को इसका फायदा मिल सके इसके लिए भारत वित्तीय विनियमन के क्षेत्र में सदस्य देशों के बीच अधिक समन्वय के लिए जोर दे रहा है और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उपायों की मांग को मजबूत कर रहा है।

डिजिटल फासले को कम करना

दुनिया की आधी आबादी के पास डिजिटल सुविधाएं नहीं हैं और भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी है। सम्मेलन में भारत से टेक्नोलॉजी और डिजिटल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सदस्य देशों के बीच अधिक सहयोग पर जोर देने की उम्मीद है। भारत JAM (जन धन आधार–मोबाइल) के जरिए अपने समावेशी डिजिटल क्रांति की विशेषता का लाभ भी दूसरों को दे सकता है। यूपीआई पेमेंट सिस्टम इसका एक बेहतरीन उदाहरण है।

भारत को G–20 से क्या फायदा होगा?

भारत को आजाद हुए 76 साल हो चुके हैं। इस दौरान देश ने कई उपलब्धियां हासिल की है। हम आज कई क्षेत्रों में टॉप–5 में हैं, कई में टॉप–3 तो कुछ जगहों पर टॉप पर हैं। इसके बावजूद भारत को विकासशील देशों में गिना जाता है। इसलिए जी–20 एक ऐसा फोरम हैं जहां भारत अपनी श्रेष्ठता को और बेहतर ढंग से बता सकता है। पीएम मोदी का भी लक्ष्य है कि जब देश आजादी के 100 साल मना रहा होगा, तब 2047 में भारत एक विकसित राष्ट्र होगा। दुनिया को बताने की जरूरत है कि भारत दुनिया का वैश्विक नेता बनने के लिए पूरी तरह तैयार है। भारत ने समय–समय पर दिखाया है कि विकसित देश उन्नत संसाधनों के बावजूद वो मुकाम हासिल नहीं कर पाते, जो भारत अपने सीमित संसाधनों के साथ कर लेता है। चाहे मंगलयान हो या कोविड जैसी महामारी में 140 करोड़ देशवासियों की रक्षा करना या फिर चंद्रयान–3 हर मामले में भारत औरों से बेहतर है. दुनिया के बाकी देश भी अगर भारत के साथ मिलकर काम करेंगे तो मानव समाज की उन्नति और पृथ्वी संरक्षण के प्रयास में तेजी लाई जा सकती है। जी–20 में भी भारत का उद्देश्य यही है। भारत का G–20 अध्यक्षता थीम भी 'वसुधैव कुटुम्बकम' या एक पृथ्वी, एक कुटुंब एक भविष्य' है।

साभार – गूगल

'रेडियो अक्ष': दृष्टि विकलांग व्यक्तियों के लिए एक विशेष वरदान

सुनील डबीर
(सेवानिवृत संयुक्त निदेशक)

दृष्टि विकलांग व्यक्तियों के लिए चलाया जाने वाला भारत का पहला इंटरनेट रेडियो चैनल, जिसका नाम 'रेडियो अक्ष' है, आज दो वर्ष पूर्ण कर रहा है। कई दशकों से नागपुर में कार्यरत दि ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन और समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल (सक्षम) द्वारा संयुक्त रूप से इसे क्रियान्वित किया गया था। यह अग्रणी अवधारणा को प्रस्तुत करने और अपनाने में सफल साबित हुआ है, जो दृष्टिबाधित लोगों को शिक्षा संसाधनों और श्राव्य अर्थात् आडियो पुस्तकों तक निर्बाध पहुंच प्राप्त करने में काफी मददगार है।

इस अवधारणा को दृष्टिबाधितों को उनके डिजिटल उपकरणों पर समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल द्वारा प्रदान की गई आडियो पुस्तकों के विकल्प के रूप में बनाया गया था, कोविड–19 महामारी के कारण जिनकी यात्रा पर प्रतिबंध के चलते पहुंच कम हो गई थी। विभिन्न विषयों को शामिल करने वाले शैक्षिक संसाधनों को दृष्टिबाधित लोगों के स्वामित्व वाले डिजिटल प्लेटफार्मों पर इस मंच के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है। इसके संचार के लिए, एफ.एम. और ए.एम. रेडियो के विपरीत, इंटरनेट रेडियो की तकनीक का उपयोग किया जाता है, जो किसी भौगोलिक सीमा से निबद्ध नहीं होता है।

चैनल के समन्वयक और समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल के सदस्य शिरीष दारव्हेकर ने बताया कि विगत दो दशकों से सैकडों दृष्टिबाधित लोग स्वयंसेवकों की सहायता से अपनी आडियो बुक तैयार करवाते थे। सक्षम द्वारा माधव ऑडियो बुक्स लाइब्रेरी के माध्यम से दृष्टिबाधितों के लिये शिक्षा एवं साहित्य की किताबें आडियो फॉर्म में निर्माण कर उपलब्ध करायी जाती रही हैं। इसके लिए प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों में सक्षम द्वारा निर्मित 'अब्रार' यह विशेष उपकरण भी शामिल है। लेकिन, कोविड महामारी ने उन्हें एक गंभीर झटका दिया और उनकी सीखने की प्रक्रिया को बुरी तरह प्रभावित किया। अतः इस उद्देश्य को साध्य करने हेतु एक वैकल्पिक व्यवस्था के बारे में सोचना पड़ा। देश में इंटरनेट रेडियो के प्रारंभ के बाद, वे इस के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए एक कंपनी के संपर्क में आए। हालांकि दृष्टिबाधित छात्रों की आवश्यकताएं कुछ ज्यादा ही विशेष थीं, उन्होंने पूर्ण सहयोग दिया और परिणामतः, दृष्टिबाधित लोगों के लिए देश की पहली इंटरनेट रेडियो परियोजना शुरू की गई। इसमें प्रसारण सामग्री पहले से रिकार्ड की जाती है, जिसे संपादन के पश्चात् उपयुक्त प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। दृष्टिबाधित छात्रों की निर्धारित आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न विषयों पर इन कार्यक्रमों को तैयार किया जाता है।

प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की एक समर्पित टीम, जिनमें ज्यादातर महिलाएं एवं गृहिणियां हैं, इस रेडियो चैनल के लिए सामग्री के निर्माण में मदद करती हैं। वे बिना किसी पारिश्रमिक के और सामाजिक दायित्व की गहरी भावना के साथ इस सेवा कार्य में योगदान करते हैं। बड़ी मात्रा में सामग्री की रिकार्डिंग, ध्वनि संपादन

और सुधार करने की जटिल एवं सावधानीपूर्वक की गई प्रक्रियाएं सर्जनशीलता को भी कायम रखती है। इस सामग्री को भारत और दुनिया भर में दृष्टिबाधित लोगों के लिए उपलब्ध कराया जाता है। 'रेडियो अक्ष' ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है, जबकि इसकी सेवा को ऐप्पल उपकरणों पर ज़ेनो रेडियो के माध्यम से भी एक्सेस किया जा सकता है। यह सेवा पूर्णतः निःशुल्क है। 'रेडियो अक्ष' की प्रसारण भाषा हालांकि हिंदी है, वर्तमान में हिंदी, मराठी एवं अंग्रेजी भाषा में विविध विषयों का प्रसारण प्रति छह घंटों की चार सभाओं में किया जा रहा है। हर दिन दो घंटे हिंदी–अंग्रेजी भाषाओं में कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाता हैं।

रेडियो अक्ष के माध्यम से प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा के अतिरिक्त, संघ तथा राज्य लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड, बैंकिंग सेवा परीक्षा जैसी विभिन्न स्पर्धा परिक्षाओं के बारे में मार्गदर्शन किया जाता है। साथ ही दिन–विशेष, दैनिक समाचार एवं खेल समाचार सहित कथा संग्रह, काव्य संग्रह, उपन्यास और चरित्र पर ग्रंथों के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के विशेष सत्र भी तैयार किये गये हैं। हर रविवार के दिन किसी एक सुविख्यात एवं प्रेरणादायक दिव्यांग व्यक्ति का साक्षात्कार भी प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा, नभोनाट्य, विचार गोष्ठी तथा काव्य पाठ का भी आयोजन किया जाता है। इन सभी विषयों की प्रस्तुति में बडी संख्या में दृष्टिबाधितों की सहभागिता भी इस रेडियो की विशेषता है। रेडियो अक्ष की सिग्नेचर ट्यून भी एक दृष्टिबाधित युवक द्वारा ही बनायी गई है।

इस रेडियो के आगामी कार्यक्रमों में संगीत क्षेत्र में 'दिव्यांग प्रतिभा', विभिन्न शारीरिक व्याधियों पर संगीतोपचार और विकलांगता अधिनियम सहित अन्य संबद्ध तथा सामाजिक मुददों पर आधारित विशेष प्रस्तुतियों का भी समावेश है। दैनंदिन प्रसारण कार्यक्रमों के माध्यम से रेडियो अक्ष के पास लगभग ढाई हजार घंटों से अधिक अवधि की प्रस्तुतियों का एक अनमोल खजाना भी तैयार हुआ है। इन कार्यक्रमों को इच्छुक श्रोताओं को उपलब्ध कराने हेतु शीघ्र ही एक नया वेब–पोर्टल और यू–ट्यूब चैनल क्रियान्वित करने की भी योजना है।

संगठन के पास उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, चैनल को देश के विभिन्न प्रांतों सहित विदेश स्थित श्रोताओं और अन्य लोगों से उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं मिली है। श्री दारव्हेकर ने कहा कि यह सेवा आने वाले दिनों में और अधिक सुचारू और व्यापक बनायी जायेगी। वर्तमान में रेडियो अक्ष की प्रसारण सेवा से कुल 70 देशों के लगभग 44,000 श्रोता लाभान्वित हो रहे है। लगभग नब्बे प्रतिशत भारतीय श्रोताओं सहित दस प्रतिशत श्रोता विदेशों से हैं।

रेडियो अक्ष पर प्रसारण हेतु श्रवण साहित्य निर्माण में कई सेवाभावी व्यक्ति विधिवत प्रशिक्षण ले कर इस कार्य में अपनी समय एवं सेवाएं दे रहे हैं। दान दाताओं द्वारा दिये जाने वाले योगदान के बल पर दृष्टिबाधितों के लिए यह अभिनव उपक्रम चलाया जा रहा है। हमारे देश में दृष्टिबाधितों तथा दृष्टि विकलांग व्यक्तियों की बडी संख्या को देखते हुए इसकी जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने से ही इसके संख्यात्मक विस्तार और गुणात्मक विकास में सहायता मिलेगी। साथ ही देश के अन्य प्रांतों एवं भाषाओं में ऐसे प्रयास का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और इस वरदान से अधिक विकलांग युवा लाभान्वित होंगे, जिससे समावेशी विकास की प्रक्रिया भी गतिमान होगी।

****

सौरभ कुमार
हिंदी समाचार कक्ष

एक छोटी सी रचना.......
सभी बहनों को समर्पित...........

तू बहन है,
सम्मान और अभिमान है,
प्रेम, स्नेह और ज्ञान है।
तू शब्द नहीं, परिभाषा है,
उच्चता तेरी अभिलाषा है।
तू प्रकाश है,
गर्व का अहसास है।
तेरे बिन, यह घर शेष है,
तू है तो यह विशेष है।
तू बहन है,
सम्मान और अभिमान है,
प्रेम, स्नेह और ज्ञान है।
तू बहन है...........................

****

हमें ऐसी शिक्षा चाहिए,
जिस से चरित्र का निर्माण हो,
मन की शांति बढ़े, बुद्धि का विकास हो,
और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा
हो सके।

–स्वामी विवेकानंद

जी–20 शिखर सम्मेलन 2023: जी 20 घोषणा पत्र भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका का द्योतक

G–20 के इस शिखर सम्मेलन ने भारत को विश्व के लिए एवं विश्व को भारत के लिए तैयार करने में सराहनीय भूमिका निभाई है। भारत मानता है कि महामारी के बाद की विश्व व्यवस्था इसके पूर्व की विश्व व्यवस्था से भिन्न होनी चाहिए।

विस्तार

भारत की अध्यक्षता में दिल्ली के भारत मंडपम में G–20 का शिखर सम्मेलन उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। देश के यशस्वी, ऊर्जावान एवं दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में इस सम्मेलन ने बुलंदियों का नया आसमान छुआ। भारत की कूटनीतिक सफलता का ही परिणाम है कि सभी सदस्य देशों द्वारा दिल्ली घोषणा पत्र को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया एवं विश्व की 85 प्रतिशत जीडीपी वाले अफ्रीकन यूनियन के G–20 समूह में प्रवेश सहित ग्लोबल साउथ की आवश्यकताओं पर ध्यान देने पर सहमति बनी। पिछले कुछ वर्षों के घटनाक्रम एवं भविष्य की राह की दृष्टि और व्यापक मानवतावादी वैश्विक दृष्टिकोण के कारण इस घोषणापत्र की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

ध्यातव्य है कि पूर्व में रूस–यूक्रेन के विषय को लेकर इस घोषणा–पत्र को स्वीकार्यता मिलने में समस्या आ रही थी। इस गतिरोध को दूर करने हेतु भारत ने कूटनीति का परिचय देते हुए घोषणा–पत्र के पैराग्राफ में ऐसे परिवर्तन किए जिससे इसे सहजता से स्वीकृति मिली। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद एवं संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्तावों पर अपने राष्ट्रीय रुख को दोहराते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के अनुरूप ही आगे बढ़ना चाहिए। साथ ही सभी को अन्य देशों की अखंडता एवं संप्रभुता या राजनीतिक स्वतंत्रता के विपरीत अधिग्रहण की धमकी या शक्ति के प्रयोग से बचना चाहिए। भारत ने स्पष्ट किया कि परमाणु हथियारों का उपयोग या उपयोग की धमकी देना भी कतई स्वीकार्य नहीं है।

आर्थिक मोर्चे की बात करें तो G–20 सदस्यों की अर्थव्यवस्था को गति देने एवं टिकाऊ आर्थिक सुधार लाने हेतु निजी उद्यमशीलता की भूमिका पर सहमति बनी है। भारत की दृष्टि से देखें तो भारत, मिडिल ईस्ट एवं यूरोप के बीच व्यापारिक कॉरिडोर की संकल्पना साकार होने से भारत के व्यापार एवं अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व गति आएगी।

इसके इतर G–20 सदस्यों ने विकासशील देशों में निवेश परियोजनाओं हेतु निजी क्षेत्रों की भूमिका को रेखांकित किया है। साथ ही वैश्विक स्तर पर आर्थिक असमानता दूर करने एवं टिकाऊ, संतुलित, सर्वसमावेशी, दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता हेतु व्यापक आर्थिक एवं संरचनात्मक नीतियों को लागू करने पर सहमति बनी है। फलतः समान विकास को बढ़ावा मिलेगा एवं व्यापार, आर्थिक एवं वित्तीय स्थिरता की मजबूती से कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा होगी।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने दोहराया G–20 की हमारी अध्यक्षता का संदेश है एक पृथ्वी, 'एक कुटुम्ब एवं एक साझा भविष्य'। अतः G–20 घोषणा–पत्र सतत, सर्वसमावेशी, प्रकृति–केन्द्रित विकास के मॉडल पर आधारित है। इसमें विकास हेतु सतत हरित मार्ग की परिकल्पना की गई है। इसी के अंतर्गत भारत की पहल पर विश्व जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत भी हुई।

शीर्ष नेताओं ने जलवायु मोर्चे सहित विश्व के समक्ष उपस्थित विभिन्न चुनौतियों से निपटने हेतु तत्काल पहल करने का आह्वान किया। निकट भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध वैश्विक मुहिम के लिए व्यापक रणनीति जैसे इस हेतु वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना करने आदि पर सहमति बनी है।

घोषणा की गई कि हम सब आर्थिक विकास एवं पर्यावरण की क्षति के मध्य संतुलित जलवायु एजेंडे के साथ धरती की सुंदरता एवं जीवन की गरिमा सुनिश्चित करेंगे। घोषणापत्र में डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे पर ध्यान देने के साथ ही प्रौद्योगिकी की समावेशी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े फायदे एवं नुकसान को ध्यान में रखते हुए नवोन्मेष समर्थक व्यवस्था को अपनाने पर जोर दिया गया जिससे वह ज्यादा उपयोगी हो सके।

आतंकवाद एवं वैश्विक भ्रष्टाचार को खत्म करने, पारंपरिक विरासत को संभालने तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के तीव्र प्रसार के प्रयासों पर भी भारत की पहल को स्वीकारता मिली है। भारत ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सर्वथा सक्षम राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिवर्तनकारी पहलुओं से सदस्य देशों को परिचित करवाया। सभी ने माना कि शिक्षा में सृजनात्मकता, तर्कसंगत सोच, अनुसंधान, कौशल विकास, उद्यमिता, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, रोजगार सृजन को बढ़ावा देकर शिक्षा के नूतन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

–साभार–गूगल

****

"अपना लक्ष्य हासिल करते वक्त
सिर्फ यही दो सोच रखनी चाहिए,
अगर रास्ता मिल गया तो ठीक,
और अगर नहीं मिला तो,
रास्ता मैं खुद बना लूंगा।"

अजीज अहमद (आज़ाद)
हिंदी समाचार कक्ष

सुशासन : एक दृष्टि

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। स्वतंत्र भारत ने लगभग 70 वर्ष के इतिहास में केवल लोकतांत्रिक सरकारों को ही शासन करते देखा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रजातंत्र हमारा गौरव है और यह विश्व में शासन की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है। परन्तु यह उल्लेखनीय है कि सुशासन स्थापित करने के लिए प्रजातंत्र पर्याप्त नहीं। (यह भी सत्य है कि प्रजातंत्र की प्रासंगिकता बनी हुई है और यह जनता को बहतु बड़ी शक्ति देता है।) यह विड़म्बना है कि 70 वर्ष के बाद भी हम भय, भूख, भेदभाव एवं भ्रष्टाचार के दानव से मुक्त नहीं हो सके हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हमारे द्वारा चुने गए जन–प्रतिनिधि, लोकसेवक तथा अधिकारी और कर्मचारी अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन करे। लोकतांत्रिक व्यवस्था की परिपक्वता में जनता का अधिक–से–अधिक शिक्षित, सतर्क एवं जागरुक होना सुशासन की दिशा में एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। सुशासन स्थापित करने के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि, हम ऐसे नियम लागू कर सके, प्रक्रिया सशक्त बना सके और शासनिक/प्रशासनिक ढांचा मजबूत कर पाएं जिससे राष्ट्र के लिए जवाबदेह, दायित्वशील, जिम्मेदारीपूर्ण, पारदर्शी शासन/प्रशासन सुनिश्चित हो सके।

सुशासन क्या है?

सार्वजनिक धन का उपयोग कुशलतापूर्वक निर्धारित उद्देश्यों के लिए ही किया जाए। अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी शासन/प्रशासन में सुनिश्चित हो एवं उनके हित सुरक्षित रहे। समाज में फैली अनगिनत बुराइयों में भ्रष्टाचार एक मुख्य बुराई है और इससे समाज का हर हिस्सा पीड़ित है। सुशासन की सबसे बड़ी चुनौतियों में भ्रष्टाचार पहले स्थान पर है। शासन/प्रशासन की नीतियां, योजना, परियोजना और निर्णय लेने से संबंधित प्रक्रिया पारदर्शी हो तथा उसमें अधिक–से–अधिक जन–सहभागिता हो, यही स्वच्छ व्यवस्था एवं पारदर्शी तंत्र का आधार है।

सुशासन का तात्पर्य है?

कुशल और उत्तरदायी प्रशासन। शासन तभी सुशासन बनता है जब संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णय और कार्रवाइयां जनहित में और संविधान सम्मत हों और शासन/प्रशासन की नीतियां, योजनाएं वंचित तबके तक पहुंच पाए। अर्थात् ऐसा तंत्र जो अधिक पारदर्शी हो तथा भय, भूख, भ्रष्टाचार और भेदभाव मुक्त हो। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक नागरिक शिक्षित एवं सतर्क हो।

सतर्कता का महत्व :

कोई भी शासन/प्रशासन व्यवस्था मात्र कानून बनाने, नियम या नीति निर्धारण से आगे नहीं बढ़ सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि जनता भी अधिक सचेत, जागरुक, शिक्षित एवं सतर्क हो। जब जनता शिक्षित होगी तो वह अपने अधिकार का उपयोग कर सरकारी/अर्द्ध–सरकारी संस्थाओं को अपने हित में कार्य करने के लिए विवश कर सकेगी। साथ ही लोकसेवक भी कार्य करते हुए अधिक सचेत, जवाबदेह रहेंगे और जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन करेंगे। अर्थात, कोई भी तरीका तभी प्रभावी एवं कारगर हो सकता है

जब इस पर लगातार नज़र रखी जाए। यह निगरानी, सतर्कता प्रतिष्ठानों जैसे– केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, 'नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक', कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग आदि संस्थाओं द्वारा हो, साथ ही, जनता द्वारा इस सन्दर्भ में 'सूचना का अधिकार' कानून का समग्र प्रयोग भी पारदर्शी व्यवस्था बनाये रखने में एक कारगर उपाय साबित होगा। यह अधिकार सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए तंत्र में फैली आवश्यक बुराइयों से निपटने में सहायक सिद्ध हुआ है।

सुशासन के लक्षण:

लोकसेवकों, जनप्रतिनिधियों, प्रतिष्ठानों, संस्थाओं की नागरिकों के प्रति 'जवाबदेही', सुशासन की एक मूलभूत आवश्यकता है। यह अधिक–से–अधिक लोगों की निर्णयों और परिणामों में समावेशी भागीदारी सुनिश्चित कराता है। यह आवश्यक है कि आम जन के मौलिक अधिकारों का हनन न हो, उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो।

सुशासन उत्तरदायित्व का बोध कराता है:

उत्तरदायित्व यानी 'जवाबदेही', हर संस्था, संगठन, प्रतिष्ठान के कार्मिकों द्वारा अपने प्रदर्शन को सुधार कर, उस संस्था की भावी योजनाओं की सफलता में सहायक बनती है। अक्सर यह देखा जाता है कि सरकारी/अर्द्ध–सरकारी संस्थाओं में उत्तरदायित्व और पारदर्शिता के अभाव के कारण वित्तीय अनियमितता होने की सम्भावना अधिक होती है। इसके मद्देनजर इस तथ्य को नहीं नकारा जा सकता कि 'सुशासन' के लिए उत्तरदायित्व और जवाबदेही बढ़ाना आवश्यक है। भारत में कई महत्वपूर्ण संस्थाएं, लोक उपक्रम इस सन्दर्भ को प्रासंगिक बना रहे हैं, जिससे एक स्वच्छ एवं पारदर्शी तंत्र विकसित हो सके। इससे नियमबद्धता, समयबद्धता एवं नियमों के पालन की भावना विकसित होती है। वित्तीय हेरा–फेरी की सम्भावना भी क्षीण होने लगती है और निचले तबके तक लाभ की योजनाओं का संचार निरन्तर होता रहता है।

सुशासन पारदर्शी है:

लगभग हर स्तर पर (शासन/प्रशासन) या लोक उपक्रमों द्वारा नागरिकों के अधिकार हनन की आशंका रहती है। भ्रष्टाचार, कार्मिकों का उत्पीड़न, कार्यदिवसों की अधिकता, लिंग आधारित भेदभाव, नियम/नीतियों का सार्वजनिक न होना या निर्णय प्रक्रिया का केन्द्रीकरण न होना आदि व्यवस्था क्षरण के मुख्य कारण हैं। इन्हें समाप्त करने का तरीका तभी प्रभावी हो सकता है जब इन पर संबंधित निरोधक संस्थाओं और जनता द्वारा करीबी तथा सतत नज़र रखी जाए। उल्लेखनीय है कि लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया का पालन कराने और नीतियों, योजनाओं को समझने में सक्षम होना चाहिए, साथ ही यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि लोक उपक्रमों, निरोधक संस्थाएं अधिक पारदर्शी हो और यह नीति–निर्धारकों को अधिक जिम्मेदार, जवाबदेह, उत्तरदायी बनाती हो, और कथित पारदर्शी प्रणाली अपनाए जाने के लिए प्रेरित करती हो।

सुशासन न्यायसंगत और समावेशी है:

एक समावेशी शासन व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि जिसमें लोकसेवक द्वारा अपने कर्तव्यों का निर्वहन बिना किसी पक्षपात, भेदभाव के किया जाता हो। साथ ही इसमें लिंग आधारित, जातिगत अथवा सामुदायिक भेदभाव रहित तंत्र का विकास हो और अधिक–से–अधिक जनभागिता का समावेशन होता हो, जो न्याय प्रक्रिया, एवं न्यायसंगत दृष्टिकोण के संदर्भ में प्रासंगिक हो।

शासन प्रभावी और कुशल हो:

सरकारी/अर्द्ध–सरकारी संस्थान, लोक उपक्रम या अन्य संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कम–से–कम संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में सर्वोत्तम सम्भव परिणाम सुनिश्चित करना, प्रक्रियाओं का पालन करना, समय का सबसे अच्छा उपयोग करना एक कुशल लोकसेवक के लिए प्रभावी

शासन की बुनियाद है और यही सुशासन की भावना से ओतप्रोत है।

सुशासन में अधिक से अधिक की भागीदारी होती है:

'सुशासन', संस्थाओं और नीति–निर्धारण में अधिक–से–अधिक जनभागिता सुनिश्चित करता है। लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर देता है। एक लोकसेवक द्वारा संस्थाओं को अपनी सिफारिशे देना या वास्तविक निर्णय लेने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न न करना, महत्वपूर्ण निर्णय की प्रक्रिया में संबंधित सभी पक्षो की भागीदारी सुनिश्चित करता है।

सार संक्षेप: किसी भी देश के विकास के लिए यह आवश्ययक है कि कम–से–कम संसाधनों का उपयोग कर अधिक से अधिक विकास के परिणाम सामने आएं। हर नागिरक की इच्छा होती है की शासन/प्रशासन, लोक उपक्रम निजी संस्थान कुशल तथा प्रभावी हो। लेकिन उक्त संस्थाओं का औचित्य तभी साबित होता है जब जनता शिक्षित, सतर्क, जागरुक, अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो। भ्रष्टाचार उन्मूलन संस्थाएं भी सक्रिय एवं विकेन्द्रीकृत होकर जनहित में कार्य कर सके, ऐसा तंत्र विकसित करें जिससे भय, भूख, भ्रष्टाचार, भेदभाव, समाप्त हो तभी सुशासन की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

****

अब गोविंन्द न आएंगे

–रविन्दर सिंह
प्रशासन अनुभाग

माना कमी तो किसी न किसी की हमेशा खलेगी
पर ये जिन्दगी है, किसी भी कीमत पर चलेगी।।
सुनो द्रौपदी, शस्त्र उठा लो अब गाविन्द न आएंगे
छोड़ो मेहन्दी खडग संभालो
खुद ही अपना चीर बचा लो
द्यूत बिठाए बैठे शकूनी
मस्तक सब बिक जाएंगे
सुनो द्रौपदी, शस्त्र उठा लो अब गाविन्द न आएंगे
कब तक आस लगाओगी तुम बिके हुए अखबारों से,
स्वयं जो लज्जाहीन पड़े हैं।
वे क्या जान बचाएंगे।
सुनो द्रौपदी, शस्त्र उठा लो अब गाविन्द न आएंगे
कल तक केवल अंधा राजा, अब गूंगा बहरा भी है
होठ सिल दिये जनता के, कानों पर भी पहरा है।
तुम ही कहो ये अश्रु तुम्हारे किसको क्या समझाएंगे
सुनो द्रौपदी, शस्त्र उठा लो अब गोविंन्द न आएंगे।।

****

विनीता ठाकुर
विदेश सेवा

कोलाज रिश्तों का

आकाशवाणी का एक अंग बनने के बाद 1992 के जनवरी माह से सोचने समझने और ज़िंदगी की रफ्तार सब कुछ अपने काम से जुड़ी हुई रही– इतनी बातें– इतने वाकयात् की अगर उनको शब्दों में बांधना हो तो– निश्चित तौर पर बहुत वक्त लग जायेगा– कुछेक संस्मरणों का कोलाज आपसे साझा करने का दिल कर रहा हैं। आकाशवाणी का एक बेहतरीन और लोकप्रिय चैनल F-M-Gold को एक कार्यक्रम अधिशासी के रूप में लगभग एक दशक संभालने पर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला– हमारे केन्द्र निदेशक श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी जी मुझे बहुत प्रोत्साहित करते और मैं पूर्ण रूप से अपने आप कार्य के प्रति गंभीर होती गई ...... उन्होंने मुझे एक बार किसी व्यक्ति का Telephone Number दिया और कहा– ये जरूरतमंद लोगों की सहायता करते हैं –blood donation के जरिये– और इन्हें Urgently खून की आवश्यकता है– मरीज AIIMS में भर्ती है – F-M-Gold की प्रस्तुतकर्ता को तमाम जानकारी दे दी मैंने – जिन महाशय का नम्बर मेरे पास था – उनको सूचित कर दिया गया। 2–3 बार उनका phone आ गया और हमने आश्वासन दिया कि 'सर हम Radio के माध्यम से सूचना दे रहे हैं – आप निश्चिंत हो जाएं' – कुछ समय बीता और मैंने अपने Mobile पर फिर Phone किया – हमने अपनी आरे से कोशिश की– अब इन्होंने फिर कॉल क्यूं किया – मैं किसी और कार्य में उलझी भी थी .... मैंने उनका Phone नहीं recieve किया तभी Landline नंबर पर एक Call आया– आमतौर पर Official कॉल आते हैं Landline पर मैंने उठाया ये उन्हीं महाशय का था– मैंने थोड़ी तसल्ली से उनसे कहा– सर चार बार हमने Publicity कर दी हैं.... उन्होंने विनम्रता से मुझे कहा ''Madam आपको कॉल किया है कि आप अब रेडियो में सूचना ना दिलवाएं क्यूंकि श्रोताओं ने उनका ये महत्वपूर्ण कार्य कर दिया था और खून उनके पास पर्याप्त हो गया– आपको धन्यवाद। मैं ग्लानि से भर गई– साथ ही अपने श्रोताओं के प्रति सम्मान से भर गई और अपने आकाशवाणी की अद्भुत क्षमता और शक्ति पर गर्व हो आया।

ऐसे ही एकबार हुआ ये कि मुझे सरकारी Quarter से संबंधित कुछ परेशानी थी और में Estate Ofiice इसी सिलसिले में गई थी। चूंकि मेरे कोई जानकार वहां थे नहीं मुझे बहुत अधिक परेशानी हो रही थी। एक अजीब सी बेबसी वाले एहसास के साथ मैं बस उस दफ्तर से निकलने ही वाली थी कि किसी ने मुझे कहा आपको मनोज जी बुला रहे हैं ....मैंने पलट कर देखा एक सुदर्शन पुरूष काला चश्मा पहन कर कम्प्यूटर पर कुछ कर रहे थे मैं गई उनके पास . ...''आप विनीता जी है? विनीता ठाकुर मैं ने कहा –''जी बिलकुल'' तब तक मुझे ये भी एहसास हो गया था कि वो विजुअली चैलेंज़ड हैं उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा और मेरी परेशानी को अपनी दक्षता से तकरीबन सही भी कर दिया मैं सहसा पूछ बैठी आप मुझे कैसे जानते हैं? मनोज जी ने कहा–''आपका एक कार्यक्रम 'दिल ही तो है' मैं रेगुलर सुनता हूं रेडियो पर जिसे आप जैनेंद्र सिंह के साथ प्रस्तुत करती हैं। साथ ही आपके कुछ रात के Shows भी 'कुछ कहते सुनते गाते पल' भी–

आपका कार्यक्रम मुझे बहुत अच्छा लगता है– आपकी आवाज़ सुनकर ही मैं समझ गया कि आप वहीं विनीता हैं। "सच में मेरी आंखें नम हो गई कोई इतना मान दे तो दिल भर ही जाता है ना। कार्यक्रम पेश करना – मैंने रेडियो सुनकर ही सीखा – अपने प्रेजेंटर को लगातार सुनकर– उनके अंदाज को उनको– फॉलो कर अपने अंदाज में ढाल कर मैं अपने कार्यक्रम में निखार लाने की कोशिश करती रही और आज भी करती हूं।

आकाशवाणी रांची में भी मैंने लगभग 14 साल बिताए और नाटक एकांश के साथ बाल कार्यक्रम भी किया – जब दिल्ली स्टेशन ज्वाइन किया तो मुझे बाल एकांश भी मिला – जिसे मैंने लंबे अरसे तक देखा – बच्चों के साथ काम करना एक अलग ही खुशी प्रदान करता है जिस गंभीरता से वो अपना कार्य करते उतनी ही मस्ती से खिलवाड़ भी – मेरे साथ वरिष्ठ उद्घोषक रजनीश गुप्ता जी भी थे – जिन्हें बच्चे भैया बुलाते थे। 2019 में मेरा स्थानांतरण मेघालय शिलांग हो गया और जब मैं वापस आई 2021 में बच्चे मेरे साथ लगातार जुड़े रहे। एक दिन एक लड़की मेरे कमरे में आई – बड़े प्यार से मुझे एक चॉकलेट दिया – Happy Teacher Day Maam मैंने उसको आशीर्वाद दिया और पूछा कि वो है कौन? उसने कहा– प्रियदर्शिनी – मैं तो अचरज में पड़ गई – इतनी जल्दी बच्चे बड़े हो गये ? बहुत खुशी हुई और मुझे उसके इस व्यवहार से बहुत खुशी होती है – 15 वर्ष पहले जो बच्चे बाल कार्यक्रम में आते थे – 12–13 वर्ष की उम्र में आज वो साइंटिस्ट, इंजीनियर और रेडियो के आर.जे. भी हैं। उन्हें देखकर दिल बाग–बाग हो जाता है।

दरअसल सब कुछ मुझे आकाशवाणी में मिला – अच्छे साथी – अच्छी जिंदगी और एक अच्छा माहौल।

****

हिंदुस्तान की शान है हिंदी
हर हिन्दुस्तानी की पहचान है हिंदी
एकता की अनुपम परम्परा है हिंदी
हर दिल का अरमान है हिंदी।

अशोक अगरोही
हिंदी समाचार कक्ष

नई रोशनी

(मैं एक बैंक में मैनेजर था। बात उन दिनों की है जिन दिनों मेरी पोस्टिंग राजस्थान की एक ग्रामीण शाखा में थी। मैं वहाँ अकेला रहता था जबकि, मेरा परिवार दिल्ली में रहता था। कभी–कभी रेल से दिल्ली आना–जाना चलता रहता था। ऐसे ही रात को रेल में सफर करते समय एक ग्रामीण युवक से मुलाकात हो गई थी। जब उसे पता चला कि मैं बैंक में मैनेजर हूँ तो उसने नम आँखों से अपनी आप बीती मेरे सामने रख दी। इसे मैं एक कहानी के रूप में आपके सामने रख रहा हूँ।)

भादों की काली रात थी। नदी के ऊपर का पुल निर्जन और भयावह लग रहा था। अचानक ही एक साया न जाने कहाँ से प्रकट हुआ। साया लापरवाह कदमों से बढ़ता हुआ पुल की रेलिंग के पास आया, कुछ क्षणों के लिये रूका और फिर एक झटके से रेलिंग पर चढ़ने लगा। अचानक ही ज़मीन के पास एक और साया न जाने कहाँ से प्रकट हो गया, जिसने पहले साये को नदी में छंलाग लगाने से रोक लिया।'......छोड़ दो मुझे छोड़ दो। मैं जीना नहीं चाहता। मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। मैं मर जाना चाहता हूँ'– पहला साया अपना पैर छुड़ाने का प्रयास करता रहा, मगर वो ज़मीन पर बैठे दूसरे साये से अपना पैर न छुड़ा सका।

अचानक बिजली कड़की और दोनों सायों ने एक दूसरे को देखा। ज़मीन पर बैठा साया रोबीले चेहरे वाला, मज़बूत जिस्म का धनी एक अधेड़ था, जबकि, आत्महत्या पर आमादा साया एक नवयुवक का था। युवक एक पल के लिये पत्थर का बुत बना खड़ा रहा मगर, कुछ ही देर में उसके अन्तर का लावा पिघल कर आँसुओं की धार बन बह निकला। वह अधेड़ के गले से लग गया और फफक पड़ा–'आपने मुझे क्यों बचा लिया? आप देखते नहीं मैं दोनों हाथों से अपाहिज हूँ। माँ बाप का साया नहीं; पढ़ा लिखा हूँ मगर बेरोज़गार हूँ। जिऊँ तो भला किस के लिये? आप ही बताएँ मैं क्या करूं?

अधेड़ ने ढाँढस बंधाया–'बेटा! हिम्मत से काम लो। कौन कहता है तुम अपाहिज हो? पगले देख मेरे भी तो दोनों पैर नहीं हैं।' युवक ने टटोल कर देखा वास्तव में अधेड़ के भी घुटनो से नीचे पैर नहीं थे। वह एक छोटी सी पहिया गाड़ी पर बैठा था। युवक गिड़गिड़ाने लगा–'बाबा, मुझे माफ कर दो। मैं.........।' इससे पहले कि युवक आगे कुछ कह पाता, अधेड़ ने भरपूर विश्वास से कहा–' बेटा ! हिम्मत से काम लो। भगवान ने सभी को सुखी नहीं बनाया है। हरेक की ज़िंदगी की तस्वीर में कोई न कोई रंग फीका है।......और रही बात आत्महत्या की तो 'आज से तुम अनाथ नहीं हो। आज से तुम मेरे बेटे हो। क्या नाम है तुम्हारा?' 'जी, कमल–युवक ने उत्तर दिया।' अधेड़ ने मुस्कुरा कर कहा–'कमल तो कीचड़ में भी मुस्कुराते हैं और तुम.......!..... और फिर अधेड़ कमल को अपने घर ले गया।

घर जा कर दोनों आँगन में चटाई पर बैठ गये, तब अधेड़ ने बताया–'मेरा नाम दिलावर सिंह है। पहले शहर में एक फैक्ट्री में नौकरी करता था। वहाँ से रिटायर होकर गॉव आ गया। ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा बेकार पड़ा था, उसे ठीक कर उसी पर खेती का विचार बनाया। खेत में बड़े–बड़े पत्थर थे। एक दिन एक बड़े पत्थर को हटाने की कोशिश कर रहा था, अचानक पत्थर मेरे दोनों पैरों पर आ

गिरा और मेरे पैर उसके नीचे दब गए। शाम का वक्त था। मैं घण्टों चिल्लाता रहा, मगर मेरी पुकार सुनने वाला कोई न था। चिल्लाते चिल्लाते रात हो गई। मैं बेहोश हो गया।........... और सवेरे जब मुझे होश आया तो मैं अस्पताल में था। मेरे दोनों पैरों में सेप्टिक हो गया था इस लिये उन्हें घुटनों के नीचे से काटना पड़ा।

जब मैं अस्पताल से लौटा तो खेती के लिये नाकारा हो चुका था। हफ्तों के फाके सहने के बाद मैंने लोहारगिरी का अपना पुश्तैनी काम करने की ठानी। मेरा बारह बरस का बेटा राधे मेरी बहुत मदद करता था, लेकिन, एक दिन निहाई पर रखी गर्म लाल छैनी उचट कर उसके सीने में जा धँसी। मैंने बहुत कोशिश की मगर मैं अपने बेटे को न बचा सका। राधे के जन्म के समय उसकी माँ पहले स्वर्ग सिधार चुकी थी। मैं भरी दुनिया में अकेला रह गया।

कमल ने दिलावर को ढाँढस बंधाया–'नहीं बाबा, अब आप अकेले नहीं हैं। मैं आपके साथ हूँ। बाबा, आपकी तरह मेरे पिता भी बहुत हिम्मत वाले थे। एक दिन गाँव में डकैतों ने हमला कर दिया। मेरे बाबा की हिम्मत की वजह से वे डाका डालने में तो सफल नहीं हो सके, मगर मेरे पिता को गोलियों से छलनी कर गये। मेरी माँ इस ग़म को सहन न कर सकी। वह भी भगवान को प्यारी हो गयी। अब मैं था और मेरी बदकिस्मती। मैंने शहर में आकर एक कारखाने में नौकरी कर ली। एक दिन काम करते समय अचानक बाँया हाथ मशीन में आ गया, उसे बचाने के चक्कर में दायाँ हाथ भी मशीन में दे बैठा। मेरे दोनों हाथ कट गये। बेरोज़गार होकर मैं दर–दर भटकता रहा। हाथ फैलाना मेरी खुददारी के खिलाफ था। बाबा, मैंने बहुत सहा मगर.........।' 'मगर अब नहीं ' दिलावर ने टोका।

कमल की कहानी सुनते–सुनते दिलावर अपने अतीत में खो गया बोला–बेटा एक समय था जब मैं भी तुम्हारी तरह सोचता था। मैं हर तरफ से निराश हो चला था। उन्हीं दिनों गाँव में एक बैंक खुला। गाँव के सरपंच की मदद से मुझे बैंक से 20,000 रू का एक छोटा सा लोन मिल गया। मैंने छोटा सा कारोबार शुरू किया। ऊपर वाले की मेहरबानी से हमारा काम चल निकला। बोलो कमल तुम क्या करोगे?' 'बाबा मैं आपके साथ भट्ठी पर काम करूँगा, कमल बोला– धौंकनी के पहिये पर पैडल लगवा कर मैं अपने पाँव से धौकनी चलाया करूँगा। कृत्रिम अंग लगवा कर मैं अपने खोये हाथों को पुनः हासिल करने का प्रयास करूँगा। बाबा अब आप दो नहीं बल्कि, हम तीन हो गये हैं।'

दोनों ने राहत की साँस ली। दोनों आराम से ज़मीन पर लेट गये। आकाश से बादल छंट गये थे। पूर्णिमा का चाँद अपनी दूधिया रोशनी बिखेर रहा था, नई रोशनी।

****

पेड़–पौधों की हरियाली,
इसमें छुपी है हमारी खुशहाली।

चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का योगदान

रविकांत
हिंदी प्रशासन

आज के समय में भारत के चिकित्सा क्षेत्र में जो कार्य किये गये हैं वह आज विश्व के सभी देश जानते हैं। वर्ष 2019 में आई महामारी– कोविड़–19 (करोना वायरस) जिससे विश्व का कोई भी देश नहीं बच पाया । करोना वायरस की खोज आज से 59 वर्ष पहले की थी जिसे एक महिला वैज्ञानिक डा. जून अल्मीड़ा ने मात्र 34 वर्ष की उम्र में ही कर ली थी। उन्होंने अपने कैरियर की शुरूआत एक लैब टैक्नीशियन के रूप में 16 वर्ष की आयु में की थी।

करोना वैक्सीन में भारत की एक अहम भूमिका रही है। भारत ने एक नहीं दो वैक्सीन को मंजूरी दी थी जो भारत में ही निर्मित थी:

- को–वैक्सीन(भारत बायोटेक द्वारा निर्मित)
- कोविशील्ड(सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा निर्मित)

भारत सरकार ने कई अन्य देशों को भी भारत में निर्मित करोना वैक्सीन उपलब्ध कराई थी जिसके कारण इस महामारी को खत्म करने में सफलता पाई गई। इससे पहले भी भारत में एक विश्व में पाई जाने वाली महामारी का ईलाज किया जाता था। जिसे चेचक के नाम से जाना जाता है। इस बीमारी का टीका तो भारत में नहीं बना परन्तु इस टीके का निर्माण डॉ. एडवर्ड जेनर ने सन् 1798 में किया था इस टीके के निर्माण से लगभग दो वर्ष पहले डॉ. एडवर्ड जेनर भारत आए थे। यहां उन्होंने देखा यूरोप के देशों में चेचक महामारी से हो रही मौतों का आंकड़ा भारत में यूरोप के मुकाबले कम था। भारत में इस टीके को देने का तरीका कुछ अलग था इस टीके का तरीका पहले जो व्यक्ति की बाजू पर एक सूई से टीका लगाया जाता और एक सप्ताह के बाद जब उस जगह फोड़ा निकल आये तो उसका पस निकाल कर दूसरे स्वस्थ व्यक्ति (जिसको चेचक ना हुआ हो) को लगा दिया जाता था इसी को देखकर डॉ. एडवर्ड जेनर को चेचक के टीके के निर्माण की प्रेरणा मिली। पहले भी भारत में शल्य चिकित्सा की जाती थी भारत के पहले या विश्व के पहले शल्य चिकित्सक(सर्जन) आचार्य महर्षि सुश्रुत थे जिनको पूरे विश्व में शल्य चिकित्सा का पिता (फादर ऑफ सर्जरी) कहा जाता है। भारत के इतिहास में आयुर्वेद का इतिहास लगभग तीन हजार वर्ष पुराना है। आयुर्वेद चिकित्सा का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। इसका श्रेय महर्षि सुश्रुत को जाता है। इनका जन्म विश्वमित्र के कुल में हुआ था। इनके द्वारा रचित सुश्रुत संहिता में "शल्य चिकित्सा" में उपयोग होने वाले उपकरण इनमें चाकू, सूईयां, चिमटिया जैसे लगभग 125 उपकरणों का स्वयं निर्माण किया था। जिनका उपयोग शल्य चिकित्सा के लिए किया जाता था।

****

मोक्षदायिनी चाटुकारिता

अशोक अगरोही
हिंदी समाचार कक्ष

जीवन का लक्ष्य है मोक्ष। इसे पाने के लिए मनुष्य न जाने क्या–क्या करता है। न जाने किस–किस को पूजता है, किस–किस के पैर पकड़ता है। किस किस को गुरू बनाता है, किस किस को बाप बनाता है। हमने भी ऐसा ही किया, मगर मिला कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं। हाँ अगर कुछ मिला तो–एक ज्ञान, कि जगत में सब मिथ्या है। मोक्ष प्राप्ति का अगर कोई द्वार है तो वह है चाटुकारिता। यही वह मार्ग है, जिस पर आगे बढ़ता मुनष्य न केवल इस जन्म में सुख पाता है, बल्कि आवागमन के इस चक्र से भी सदा के लिए मुक्त हो जाता है। भक्त इसे अपने–अपने स्वार्थ की दृष्टि से कई नामों से पुकारते हैं। कुछ इसे चमचागीरी कहते हैं तो कुछ मस्का लगाना। कुछ इसे मक्खनगीरी कहते हैं, तो कई लोग शालीनता का आवरण ओढ़ इसे शिष्टाचार कहते हैं। नाम कुछ भी हो लेकिन भाव वही है, तलवे चाटने का।

सनातन सत्य है कि जीवन के हर सफर में हर कदम पर या तो मनुष्य स्वयं किसी की चाटुकारिता करता है या दूसरों से अपनी करवाना चाहता है। मशीन में डाले जाने वाले ऑयल की तरह किसी ऑफिस में मक्खनगीरी नीचे से ऊपर तक फैली होती है। जिस बॉस को आप मक्खन लगाते हैं, वह अपने बॉस को लगाता है और उसका बॉस अपने बॉस को। ग़रज़ यह है कि हर व्यक्ति चापलूसी पसंद है। वह किसी की करता है तो किसी से करवाता है।

जिस तरह हर व्यक्ति जोरू का गुलाम होता है लेकिन, सार्वजनिक रूप से यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाता, ठीक उसी तरह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चाटुकार हरेक व्यक्ति होता है, किन्तु वह सबके सामने यह स्वीकार करने में संकोच करता है। अतः गर्व से कहो हम चमचे हैं।

वर्षों के अनुसंधान के बाद निष्कर्ष निकला है कि, कई लोग जन्मजात चाटुकार होते हैं तो कई लोग कठोर परिश्रम के बाद यह गुण अर्जित करने का गौरव प्राप्त करते हैं। चाटुकारिता के प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि भगवान की कथा की तरह चाटुकारिता भी मनवांछित फल देने वाली है। कार्यालय में पदोन्नति से लेकर, घर में सम्पत्ति पाने तक, हर मौके पर चमचागिरी अपना रंग दिखाती है। स्कूल में ही ले लीजिये–जो बच्चे अपने टीचर की चमचागीरी करते हैं, कक्षा में उनकी परफॉरमेन्स भले ही कैसी हो, मगर इन्टरनल असेसमेन्ट में उन्हें सदा ही अच्छे अंक मिलते हैं। दफ्तर में प्रमोशन के मामले में चाटुकारिता एक अतिरिक्त योग्यता की तरह काम आती है।

चाटुकारिता की श्रीवंदना सुन कर दिल के दरवाज़े पर इस सवाल की दस्तक जरूरी है कि आखिर चाटुकारिता है क्या ? किसी समय में यही प्रश्न हमने अपने गुरू चापलूस शिरोमणी से किया था। उन्होंने जो गुरूमंत्र दिया था, वह है तो रहस्य की बात किन्तु जनकल्याण की आपकी प्रबल भावना को देखते हुए हम आपसे कहते हैं, सो ध्यान से सुनो। उन्होंने कहा था– वत्स ! धूप, दीप तुलसी से राजी सतदेवा अर्थात् चापलूसी करने के लिये अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती, बस अपने आराध्य बॉस के तलवे चाटने का भाव मन में रखना होता है।

जीवन का लक्ष्य है मोक्ष। इसे पाने के लिए मनुष्य न जाने क्या–क्या करता है। न जाने किस–किस को पूजता है, किस–किस के पैर पकड़ता है। किस किस को गुरू बनाता है, किस किस को बाप बनाता है। हमने भी ऐसा ही किया, मगर मिला कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं। हाँ अगर कुछ मिला तो–एक ज्ञान, कि जगत में सब मिथ्या है। मोक्ष प्राप्ति का अगर कोई द्वार है तो वह है चाटुकारिता। यही वह मार्ग है, जिस पर आगे बढ़ता मुनष्य न केवल इस जन्म में सुख पाता है, बल्कि आवागमन के इस चक्र से भी सदा के लिए मुक्त हो जाता है। भक्त इसे अपने–अपने स्वार्थ की दृष्टि से कई नामों से पुकारते हैं। कुछ इसे चमचागीरी कहते हैं तो कुछ मस्का लगाना। कुछ इसे मक्खनगीरी कहते हैं, तो कई लोग शालीनता का आवरण ओढ़ इसे शिष्टाचार कहते हैं। नाम कुछ भी हो लेकिन भाव वही है, तलवे चाटने का।

सनातन सत्य है कि जीवन के हर सफर में हर कदम पर या तो मनुष्य स्वयं किसी की चाटुकारिता करता है या दूसरों से अपनी करवाना चाहता है। मशीन में डाले जाने वाले ऑयल की तरह किसी ऑफिस में मक्खनगीरी नीचे से ऊपर तक फैली होती है। जिस बॉस को आप मक्खन लगाते हैं, वह अपने बॉस को लगाता है और उसका बॉस अपने बॉस को। ग़रज़ यह है कि हर व्यक्ति चापलूसी पसंद है। वह किसी की करता है तो किसी से करवाता है।

जिस तरह हर व्यक्ति जोरू का गुलाम होता है लेकिन, सार्वजनिक रूप से यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाता, ठीक उसी तरह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चाटुकार हरेक व्यक्ति होता है, किन्तु वह सबके सामने यह स्वीकार करने में संकोच करता है। अतः गर्व से कहो हम चमचे हैं।

वर्षों के अनुसंधान के बाद निष्कर्ष निकला है कि, कई लोग जन्मजात चाटुकार होते हैं तो कई लोग कठोर परिश्रम के बाद यह गुण अर्जित करने का गौरव प्राप्त करते हैं। चाटुकारिता के प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि भगवान की कथा की तरह चाटुकारिता भी मनवांछित फल देने वाली है। कार्यालय में पदोन्नति से लेकर, घर में सम्पत्ति पाने तक, हर मौके पर चमचागिरी अपना रंग दिखाती है। स्कूल में ही ले लीजिये–जो बच्चे अपने टीचर की चमचागीरी करते हैं, कक्षा में उनकी परफॉरमेन्स भले ही कैसी हो, मगर इन्टरनल असेसमेन्ट में उन्हें सदा ही अच्छे अंक मिलते हैं। दफ्तर में प्रमोशन के मामले में चाटुकारिता एक अतिरिक्त योग्यता की तरह काम आती है।

चाटुकारिता की श्रीवंदना सुन कर दिल के दरवाज़े पर इस सवाल की दस्तक जरूरी है कि आखिर चाटुकारिता है क्या ? किसी समय में यही प्रश्न हमने अपने गुरू चापलूस शिरोमणी से किया था। उन्होंने जो गुरूमंत्र दिया था, वह है तो रहस्य की बात किन्तु जनकल्याण की आपकी प्रबल भावना को देखते हुए हम आपसे कहते हैं, सो ध्यान से सुनो। उन्होंने कहा था–वत्स ! धूप, दीप तुलसी से राजी सतदेवा अर्थात् चापलूसी करने के लिये अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती, बस अपने आराध्य बॉस के तलवे चाटने का भाव मन में रखना होता है। अरे सांसारिक! प्राणी इसका सीधा–सीधा अर्थ है कि अगर आपका बॉस कुछ एक्स्ट्रा काम करने को कहे तो उसे मना मत करो, भले ही वह काम आपकी सीट का हो या न हो। यदि आपने दो बार ऐसा कर दिया तो समझो आप बॉस के कृपा पात्र बन गये।

इसका अर्थ यह कतई नहीं कि चापलूसों को ज़्यादा काम करना पड़ता है। अगर चापलूस भी हुए और काम भी ज़्यादा किया तो मक्खन लगाने का फायदा क्या? सार की बात तो यह है कि एक घण्टा एक्स्ट्रा काम करके आपको कई बार देर से आने और जल्दी जाने का लाइसेन्स मिल जाता है। और सबसे बड़ी बात कि आप एक बार अगर चमचों की श्रेणी में आ गए तो फिर आपका काम तो फिर

****

आकर्षिता सिंह
हिंदी समाचार कक्ष

अजीब दास्तां है ये

अजीब दास्तां है ये
अपने पेड़–पौधे–फूल–पत्तियों को,
काटकर, छाँटकर, नोंचकर, फेंककर।
बड़ी–बड़ी इमारतों से प्रकृति को दरकिनार कर।
विकास की सीढ़ियों पर जोरों–शोरों से आगे बढ़कर।
तुम दूरदेश, दूरदराज, पहाड़ों पर जाते हो,
सिर्फ एक पेड़, एक नदी, एक फूल को निहारने,
इस प्रकृति में बिखरी असीम शांति को पाने।।
क्या अजीब दास्तां है ये,
जब तुम्ही नदियों को नाला बनाकर
कारखानों के कचड़ों से उनकी शुद्धता छीनकर,
उनका कलकल बहता हुआ पानी रोककर,
उनके वास्तविक आकार से उन्हें संकरी बनाकर,
काशी की वरूणा, प्रयाग की गंगा को मैला कर,
कोशी की शुद्धता को ढूंढते हो उत्तराखंड में,
अजीब दास्तां है ये।।

****

एक स्त्री के कुछ प्रश्न

क्या मैं तुम्हारी लालसाओं को तृप्त करने का कोई जरिया हूं?
क्या मैं तुम्हारे आकर्षण मात्र सुंदरता की प्रतिमा हूं?
क्या मैं तुम्हारे अहंकार मात्र तुम्हारी दासी हूं ?
क्या मैं तुम्हारे ह्रदय तृप्ति मात्र तुम्हारी संगिनी हूं?
क्या मेरी प्रजनन शक्ति तुम्हारा कोई निजी यंत्र है?
क्या मेरा अस्तित्व तुमारे वर्चस्व से है?
क्या मेरी मर्यादाएं तुम्हारी स्वतंत्रता अपितु हैं?
क्या मेरी इच्छाएं सिर्फ तुम तक सीमित हैं?
क्या मेरी प्रत्येक श्वास पर अधिकार तुम्हारा है?
क्या मेरी सहनशीलता तुम्हारे आक्रामक होने हेतु है?
क्या मैं तुम्हारे वस्त्रों की तरह परिवर्तनशील हूं?
स्त्री की कोख से जन्मी, क्या मेरे जन्म पर अधिकार तुम्हारा है?
क्या मेरी खुशियों पर पाबंदियां तुम्हारी हैं?
क्या मेरा धर्म सिर्फ तुम्हारे कर्मों का सहयोग हैं?
क्या मैं स्त्री सिर्फ पुरुष के लिए हूँ?
क्या मुझे देवी बनाकर प्रताड़ना में जकड़ने की मंशा तुम्हारी है?
क्या लड़की को लड़की जैसा बनाने का श्रेय तुम्हारा है?

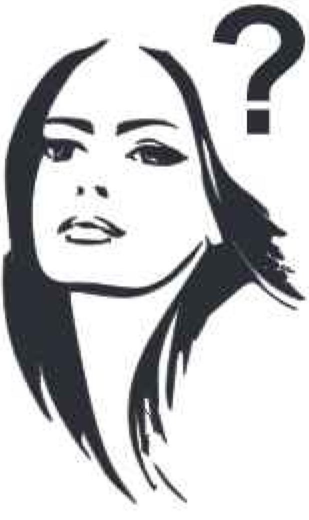

मां को दिलासा

अनिल
हिंदी समाचार कक्ष

माँ, उम्मीद ना टूटने देना
तेरे आंचल में फिर समाएगा तेरा सलोना

मां, चल पड़ा हूं छोड़ कर अब डेरा
रास्ते में कई रातें बीतीं, कई बार हुआ सबेरा
पोटली में ले रखी हैं रोटियां और चटनी
खूब काम आया सिखाया हुआ सब तेरा माँ,
तकती रहना राहें, राहों में है तेरा सोना
तेरे आंचल में फिर समाएगा तेरा सलोना

माँ, संकट तो अति गंभीर है
मेरे जैसे हजारों बेटों की भीड़ है
सब चल रहे थामे हाथों में साहस का डंडा
कुछ हिम्मत हार गए, कुछ हाथ पसार गए
मगर मैं पहुंचूंगा, तुम धीरज ना खोना
तेरे आंचल में फिर समाएगा तेरा सलोना

माँ, हम गरीबों का कोई ना होता साथी
काम निकालने वाले ये बड़े लोग हैं स्वार्थी
जब इनसे हमारा पेट भी ना पाला गया
जंगल के रास्ते चल पड़े जंगल का लिए बाती
माँ, अभी बहुतू दूर हूँ, मगर तुम दुखी ना होना
तेरे आंचल में फिर समाएगा तेरा सलोना

माँ, आज नई सुबह नई आस जगी
रेल की पटरियों से खूब दूर तक रेस लगी
अब लगता है, थक गया हूँ माँ
आज तो चिकनी पटरियों पर खूब आएगी नींद
कल जागा तो एक झोंके में तेरी गोद में होगा तेरा ये खिलौना
तेरे आंचल में फिर समाएगा तेरा सोना

माँ तकती रही पगडंडियाँ
बेटा, अब क्या भूल गया रस्ता या,
गाँव में ही छुपकर खेल रहे बचपन की अठखेलियां
आज चार दिन बीत गए जो आने को कहा था
तभी अचानक शोर सी आई
दालान पर गाड़ी रुकी
सफेद वस्त्र में लिपटा माँ का लाल
माँ काठ की मूर्ति, गिर पड़ी
उम्मीदें टूट गई, आंचल छितरा गया

****

मेरी सहचरी तनहाई

सत पाल,
हिन्दी समाचार कक्ष,

जब भी हालातों से ठन जाती है
तन्हाई मेरी सहेली बन जाती है
हमेशा मुझसे मेरा हाल पूछती है
इस बेबसी पर सवाल पूछती है
थाह लेती है मेरा मन टटोलती है
राज़ मन के मेरे सामने खोलती है
खुश रंग यादें मुझ पे निसार करती है
साथ मेरे समस्या पर विचार करती है
मेरे अनकहे भावों को भी पढ़ लेती है
नए प्रतिमान मेरे किरदार में गढ़ देती है
बुरी यादों को जब तब कुरेदती है
सकून के लम्हों को भी सहेजती है
मेरे रूठने पर मुझसे इसरार करती है
हर परिस्थिति के लिए तैयार करती है
गलतियां भूला कर नीव रिश्तों की सींचती है
दोस्तों की तरह नादानियों पर टांग खिंचती है
हर रस्म को ये दोस्ती की भरपूर निभाती है
जिगरी यार की तरह मुझपर हक़ जताती है
मुझे किसी के भी साथ बाँटती नही है
मेरी बेवकूफ़ियों पर मुझे डाँटती नही है
महफ़िल में रहूँ तो मेरा इंतज़ार करती है
ये भी माँ की तरह मुझसे प्यार करती है
कभी–कभी ये मेरी खुशियों से जलने लगती है
तब मुझे किसी की कमी खलने लगती है
जो इस तन्हाई को मेरे साथ बाँट ले
मेरी ख़ताओं पर बेशक मुझको डाँट ले
जो इसकी तरह ही सिर्फ मेरा बन जाये
जैसे ये सिर्फ मेरी बन जाती है
जब भी ज़िन्दगी से ठन जाती है
ये तन्हाई मेरी सहेली बन जाती है

****

दीवारें मन की

शिष्टाचार के अर्थ बने अब बहुत अनोखे हैं।
जीवन के पग– पग पर देखो कितने धोखे हैं।।
आडंबर है शिखर– शिखर, तथ्य तहखाने में।
अवसरवाद के सिक्कों को सब जुटे भुनाने में।।
अंतर्मन को खोल कर कोई बात नहीं करता।
स्वार्थ के सूखे सागर में, विश्वास कहां तरता।।
अपनेपन में क़ैद सभी, औरों की ख़बर किसे ।
बड़ी– बड़ी दीवारें मन की, पर नहीं झरोखे हैं।।
प्रतिपल रंग बदलती दुनिया, खेल निराला है ।
कठिन, दाल में पता लगाना कितना काला है।
धन, दौलत ही बना हुआ है रिश्तों का आधार।
मन के संबंधों की अब यह बात हुई बेकार।।
मन का मीत अगर ढूंढोगे, खुद खो जाओगे ।
एक – एक चेहरे पर न जानें कई मुखौटे हैं।।

शिष्टाचार के अर्थ बने अब बहुत अनोखे हैं।
जीवन के पग–पग पर देखो कितने धोखे हैं।

****

गीतांजलि कपूर

मेरी मुक्तेश्वर यात्रा

उत्तराखंड के अनेक खूबसूरत पर्यटक स्थलों में से एक है मुक्तेश्वर जो कि नैसर्गिक सौंदर्य और एडवेंचर का खूबसूरत पैकेज हैं। यह दर्शनीय स्थल नैनीताल से लगभग 51 किलोमीटर की दूरी एवं समुद्र की सतह से 2286 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है । यह स्थल फलों के बगीचों एवं देवदार के घने जंगलों से घिरा हुआ है ।

मुक्तेश्वर एक छोटा पहाड़ी शहर है जो अपने शांत वातावरण, सुखद जलवायु और बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियों के लुभावने दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। पिछले वर्ष मुझे गर्मियों की छुट्टियों में मुक्तेश्वर जाने का अवसर मिला। हम पहले ट्रेन से काठगोदाम पहुंचे और फिर टैक्सी से मुक्तेश्वर। हमारा रिसॉर्ट बहुत ही खूबसूरत स्थान पर स्थित था और हमारे कमरे से हिमालय की चोटियाँ दिखाई देती थी, जो अत्यंत मनमोहक थीं । वहाँ से सूर्योदय व सर्यास्त का दृश्य बहुत ही आकर्षक व रोमांचक था ।

मुक्तेश्वर में देखने के लिए मुक्तेश्वर धाम मंदिर, चौली की जाली व भालूगाड़ वॉटरफॉल है ,जो आपका दिल जीत लेंगे। इस शहर के उच्चतम बिंदु पर, मुक्तेश्वर धाम मंदिर है, जो की 2315 मीटर की ऊँचाई पर स्तिथ है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग 100 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यहां भगवान शिव के साथ ब्रह्मा, विष्णु, पार्वती, हनुमान और नंदी जी भी विराजमान हैं। पांडवों ने अपने निर्वासन के दौरान यहां भगवान शिव की पूजा अर्चना की थी। मंदिर का निर्माण करीब 350 वर्ष पूर्व कराया गया था। मुक्तेश्वर धाम मंदिर से आप हिमालय की चोटियों का बहतरीन दृश्य देख सकते हैं। यहाँ से नंदा देवी, त्रिशूल आदि हिमालय पर्वतों की चोटियाँ दिखती हैं।

यहां से आप प्रकृति के बीच ट्रैकिंग करते हुए चौली की जाली पहुँच सकते हैं, जो एक प्राकृतिक चट्टान है, यहाँ आप रॉक क्लाइम्बिंग और रैपलिंग भी कर सकते हैं। यहाँ से दिखने वाला विहंगम दृश्य आपको मंत्रमुग्ध कर देगा। यहाँ से दिखाई देने वाले प्राकृतिक दृश्य आविस्मरणीय हैं । यहां से गिद्ध और अन्य पक्षियों को उड़ते और शिकार करते भी आप देख सकते हैं। देवदार के जंगल, बर्फ की चोटियां और वन्य प्राणी जैसे बाघ और भालू अनायास दिखाई दे जाते हैं। ये यहां के आकर्षण हैं। मुक्तेश्वर की असली खूबसूरती वहां की प्रकृति में तो है ही, देवदार के जंगलों में बहती हवाओं की आवाज रोमांच पैदा करती है। चिड़ियों की चहचहाहट मन को निर्मल करती है और पर्यटक ध्यानमग्न होकर शांति की तलाश करते हैं।

मुक्तेश्वर धाम मंदिर से करीब छह किमी की दूरी पर स्थित है भालूगाड़ वॉटरफॉल जो एक अद्वितीय स्थल है यहाँ पहुँचने के लिए आपको दो किमी का ट्रैक करना पड़ता है। यह ट्रैक बेहद खूबसूरत है और यहाँ आप शांति व प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद ले सकते हैं जो आप के मन को प्रफुल्लित कर देगा।

वैसे तो यहां साल में कभी भी जाया जा सकता है परंतु यहां जाने का उचित समय मार्च से जून और अक्टूबर से नवंबर तक है। अगर गर्मियों में यहां जाएं तो हल्के ऊनी कपड़े और सर्दियों में जाएं तो भारी ऊनी कपड़े साथ ले जाएं। गर्मियों में यहां का अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 15 डिग्री और सर्दियों में अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 0 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। जनवरी में यहां बर्फबारी भी हो जाती है। चूंकि मुक्तेश्वर एक छोटा–सा हिल स्टेशन है इसलिए यहां रहने और खाने के ढेर सारे ऑप्शन तो नहीं मिलेंगे पर रहने–खाने की कोई परेशानी भी नहीं होती है। मुक्तेश्वर के आस–पास देखने के लिए ढेर सारी जगह हैं। यहां से अल्मोड़ा, बिन्सर और नैनीताल पास ही हैं। अगर चाहें तो मुक्तेश्वर जाते हुए या मुक्तेश्वर से वापिस आते हुए भीमताल पर बोटिंग और पैरागलइडिंग का आनंद भी ले सकते हैं।

रेलमार्ग से जाना चाहें तो दिल्ली से काठगोदाम तक सीधी रेल सेवा है। काठगोदाम से आगे मुक्तेश्वर तक का 73 किलोमीटर का सफर पूरा करने के लिए काठगोदाम से ही बस या टैक्सी आसानी से मिल जाती हैं। अगर वायु मार्ग से जाना चाहें तो नजदीकी हवाईअड्डा पंतनगर है जो मुक्तेश्वर से लगभग 100 किलोमीटर पहले है। वैसे आप मुक्तेश्वर अपनी गाड़ी द्वारा भी जा सकते हैं। दिल्ली से मुक्तेश्वर की दूरी 358 कि.मी है।

यह स्थल बहुत ही शानदार एवं शांत है। इस स्थल की नैसर्गिक सुंदरता और यहाँ पहुँचने के रास्ते के मनोरम दृश्य आप का मन मोह लेंगे और हमेशा आपकी स्मृति में रहेंगे। हर प्रकृति प्रेमी को एक बार मुक्तेश्वर अवश्य जाना चाहिए। प्रकृति का अद्भुत सौंदर्य समेटे मुक्तेश्वर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

****

मुक्तेश्वर मंदिर

भालू गाड़ वाटरफॉल

सामाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी
में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

DELHIN-2012-43376

समाचार प्रभात	08:00 to 08:30 AM
दोपहर समाचार	02:30 to 03:00 PM
समाचार संध्या	08:00 to 08:30 PM

आकाशवाणी समाचार भारती

संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001

www.newsonair.gov.in

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी नव प्रसारण भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली 110001
की ओर से सहायक निदेशक द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा
आई प्रिंट, प्रिंटिंग प्रेस, आर जेड एफ -396, पालम, नई दिल्ली- 110077 से मुद्रित